महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024+जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक) | पृष्ठ: 18 www.mgcub.ac.in parisarpratibimb@mgcub.ac.in @MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

दीक्षांत समारोह: चंपारण की धरती सत्याग्रह और अहिंसा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: उप-राष्ट्रपति

धूम-धाम से मना महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह

कुलपति की कलम से

प्रो. संजय श्रीवास्तव
मा. कुलपति
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार

करना होगा तिमिर पार....

वसंत के आगमन के साथ जीवन-दृष्टि में बदलाव और नए उजास की तलाश प्रारंभ हो जाती है। यह ऋतु चक्र नहीं जीवन चक्र है। यही ऋतू चक्र का जीवन चक्र के रूप में सकारात्मक परिवर्तन है। यह परिवर्तन हमें सदैव नया और बेहतर करने को प्रेरित करता है। विश्वविद्यालय में खेल को उत्सव के रूप में जब धूम-धाम से मनाना शुरू किया गया तो लगा कि अब हर ऋतु चक्र में ऐसे उत्सव आयोजित किये जाएँ, ताकि विद्यार्थी के साथ शिक्षक भी तरो-ताजा महसूस करते रहें।

दीक्षांत समारोह में मा. राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने ठीक ही कहा कि नदी में एक स्थान पर बने रहने के लिये भी कदम ताल जरूरी है। वैसे ही हमारे जीवन में भी अध्ययन बेहद ही जरूरी है। गणतंत्र दिवस को याद करते हुए विकसित भारत के सपने को पूरा करने में जुटने के आह्वान से पूरे शैक्षणिक परिसर में नवीन ऊर्जा का संचार हो रहा है।

विविध विषयों पर आयोजित संगोष्ठियों के साथ वैचारिकी में चंपारण सत्याग्रह और स्वस्थ जीवन शैली के अतिरिक्त विविध आयामों पर चर्चा परिसर की बहुरंगी इन्द्रधनुषी छटा को दर्शाती है। उमंगों की आशा में पीताभ कायम रहे, इसके लिये दृष्टिकोण में सकारात्मक परिवर्तन की जरूरत है। सहजता, सौम्यता और सादगी को अंगीकार किये बिना हम श्रेष्ठ नागरिक कैसे बन सकते हैं ?

भारत बहुभाषी देश है। संस्कृति, लोकाचार में भले ही ऊपरी तौर पर भिन्नता दिख सकती है, पर भीतर भावात्मक एकता है, ऐसे बहुभाषी देश में हिंदी ही ऐसी प्रबल संवाहक है, जो सहजता से आदान-प्रदान की प्रभावी अभिव्यक्ति और समर्थ पुल है। ये सारी सांस्कृतिक गतिविधियाँ भारतीयता की पहचान हैं।

जीवन, प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान है। सृजन का सर्वोत्तम प्रतिफल और सृजक की सर्वोत्तम कृति एवं असीमित ऊर्जा का अंश है। ऋतु परिवर्तन से परिसर पुनः ऊर्जा से लबरेज है।

प्रयागराज के अविस्मरणीय कुम्भ ने हम सभी में आध्यात्मिक चेतना को पुनः जागृत किया। पवित्र जीवन की दृढ़ शिला पर उन्नति का भव्य भवन खड़ा होता है। पवित्रता का मेरुदंड सत्य है। सत्य की सदा विजय होती है, असत्य की नहीं। सत्य दिव्य लोकों की प्राप्ति का मार्ग है, इसलिए विद्यार्थियों को कंटक मार्ग ही सही, पर इसे ही अंगीकार करना चाहिए।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा राजा बाजार स्थित महात्मा गाँधी प्रेक्षागृह में द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन किया गया। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि भारत गणराज्य के उपराष्ट्रपति माननीय श्री जगदीप धनखड़ थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में सूबे के राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर थे। सांसद सह पूर्व केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री राधा मोहन सिंह उपस्थित थे। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. महेश शर्मा ने की व विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

दीक्षांत समारोह की शुरुआत शैक्षणिक शोभा यात्रा के साथ सशस्त्र सीमा बल की धुन पर हुआ। राष्ट्रगान के पश्चात विश्वविद्यालय की कुलगीत का गायन हुआ। माँ सरस्वती की प्रतिमा व बापू की प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के द्वारा उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़, सूबे के राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर, सांसद राधामोहन सिंह एवं कुलाधिपति डॉ. महेश शर्मा को उत्तरीय, संकट मोचन की प्रतिमा व महात्मा गाँधी का जीवन चक्र चरखा देकर सम्मानित किया गया। कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव को सम्मानित किया।

स्वागत वक्तव्य में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय शोध का प्रमुख केंद्र बनता जा रहा है। विश्वविद्यालय नित प्रतिदिन नई ऊंचाइयों को छू रहा है। हाल ही में एनआरआईएफ रैंकिंग में विश्वविद्यालय ने 20वां स्थान प्राप्त की है और भविष्य में नैक विजिट की तैयारी भी विश्वविद्यालय कर रहा है। विश्वविद्यालय अनेक संस्थाओं के साथ एमओयु पर हस्ताक्षर कर रहा है। विद्यार्थी विश्वविद्यालय के ब्रांड एंबेसडर हैं, जिनकी उपलब्धि हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्वागत भाषण के पश्चात विश्वविद्यालय के कुलानुशासक द्वारा उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों की सूची प्रस्तुत की गई। जिसमें 121 छात्र स्नातक से, 265 स्नातकोत्तर और 47 छात्र पीएचडी से शामिल थे। स्वर्ण पदक उपराष्ट्रपति के द्वारा दिया गया जिसमें, कुलाधिपति स्वर्ण पदक अंजली सिंह, सुनीधी, श्वेता सिंह, द्विज्यपाल, राहुल राजेश गुप्ता को दिया गया। कुलपति स्वर्ण पदक हेमंत वर्मन, हिमांशु रंजन, नवीन कुमार व मानवी भार्गव को दिया गया।

दीक्षांत समारोह को संबोधित करते माननीय उप-राष्ट्रपति

दीक्षांत समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथि

हाइलाइट्स

■ कुलाधिपति स्वर्ण पदक :
विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों अंजलि सिंह, सुनिधि सिंह, और स्वेता कुमारी को कुलाधिपति स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। ये तीनों छात्रायें पुस्तकालय विज्ञान विभाग से हैं।

■ कुलपति स्वर्ण पदक :
विभिन्न विभागों के 26 टॉपर्स को कुलपति स्वर्ण पदक दिए गये।
दिग्विजय पॉल, सुमना पॉल, मोबासिरा फिरदौस, प्रियंका कुमारी, राहुल राजेश गुप्ता, फिरदौस जहां, शुभम रंजन, आयुषी दास, अंजलि सिंह, पंकज कुमार, आर्यन कुमार, हेमंत बर्मन, नमन गौतम, सुभलक्ष्मी दास, रक्षित सिंह, जाकी अहमद, संदीप कुमार, हिमांशु रंजन, आज़ाद आलम, शिवांगी, नवीन कुमार मंडल, शालिनी साक्षी, आकाश राज, मधुरी सिंह, सुनिधि, और मानवी भार्गव।

■ इन्हें मिला विशिष्ट स्वर्ण पदक :
* ***महर्षि कणाद स्वर्ण पदक:*** दिग्विजय पॉल, भौतिकी विभाग।
* ***महर्षि सुश्रुत स्वर्ण पदक:*** राहुल राजेश गुप्ता * जीवन विज्ञान संकय।
* ***आर्यभट्ट स्वर्ण पदक:*** अंजलि सिंह, संगनक विज्ञान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संकाय।
* ***महर्षि वाल्मीकि स्वर्ण पदक:*** हेमंत बर्मन मानविकी और भाषा संकाय।
* ***सम्राट अशोक स्वर्ण पदक:*** हिमांशु रंजन और शालिनी साक्षी, सामाजिक विज्ञान संकाय।
* ***महर्षि कात्यायन स्वर्ण पदक:*** आजाद आलम, शिक्षा संकाय।
* ***आचार्य कौटिल्य स्वर्ण पदक:*** नवीन कुमार मंडल और मानवी भार्गव, वाणिज्य और प्रबंधन विज्ञान संकाय।
* ***आर्यभट्ट स्वर्ण पदक:*** सुनिधि संगणक विज्ञान, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संकाय।
* ***प्रोफेसर जनार्दन प्रसाद पदक:*** सुभलक्ष्मी दास, अर्थशास्त्र विभाग।

■ समारोह की मुख्य विशेषताएं :
* 433 डिग्रियों का वितरण।
* उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया।
* स्वर्ण पदक की संख्या 40 थी।
* विश्वविद्यालय अपने इतिहास में पहली बार 47 पी.एच.डी. डिग्रियां प्रदान किया गया।

साफा/पगड़ी के रंग विभिन्न शैक्षणिक समूहों के लिए निर्धारित :
भगवा: माननीय कुलपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के लिए
बैंगनी: अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष और कार्य परिषद एवं विद्या परिषद के सदस्य
मैरून: पी.एच.डी. प्राप्तकर्ता
पीला: परास्नातक छात्र
गुलाबी: स्नातक छात्र

उपराष्ट्रपति ने कहा :
मुख्य अतिथि उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने कहा कि चंपारण की धरती सत्याग्रह और अहिंसा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। जिसका नतीजा आजादी के आंदोलन में बड़ा बदलाव लाने के लिए सक्रियता से लोग जुड़े। यहां के लोग राष्ट्रवाद व राष्ट्र चेतना की भावना से ओत-प्रोत है। इस विश्वविद्यालय से जो भी अध्ययन होगा वह राष्ट्रीय चेतना के लिए समर्पित है। नेशन फर्स्ट के लिए समर्पित है। इस विश्वविद्यालय के पहले दीक्षांत समारोह में भारत के राष्ट्रपति महामहिम द्रौपदी मुर्मू आयी थी और द्वितीय दीक्षांत समारोह में मैं खुद यहां आया हूं, इस क्षण को मैं हमेशा याद रखूंगा। उन्होंने कहा कि नदी में एक स्थान पर रहने के लिए भी कदम ताल जरूरी है। वैसे ही हमारे जीवन में भी अध्ययन बेहद ही जरूरी है। बच्चा जब जन्म लेता है तो आगे बढ़ता है, गिरता है और वह वही से चलना सीखता हैं। हमें कभी नही डरना चाहिए। आगे बढ़ते रहना चाहिए। आज भारत अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में अपना मिसाल कायम कर रहा है। सभी निर्णय पारदर्शिता के साथ लिए जा रहे हैं। विकसित भारत की संकल्पना किसी एक व्यक्ति से नहीं बल्कि 140 करोड़ लोगो के मेहनत से होगी। गाँधी जी ने प्रकृति से प्रेम करने को कहा था लेकिन उसे हम भूल गए हैं। इसे वापस लाने के लिए प्रधानमंत्री जी का योजना एक पेड़ मां के नाम काम आएगा। हमें स्वदेशी की तरफ आने की भी जरूरत है। हमें वोकल फॉर लोकल होने की जरूरत है। पहले देश की विदेशी मुद्रा भंडार काफी कम हुआ करती थी, लेकिन वर्तमान समय में विदेशी मुद्रा भंडार भरा हुआ है। उन्होंने यह भी कहा कि विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रण लेना चाहिए कि वह विश्वविद्यालय को फंड दे चाहे वह कितना भी हो। हमें अपने परिवेश से बाहर निकल कर सोचने की जरूरत है। बिहार की धरती सांस्कृतिक विरासत कि मिसाल है। यहां डॉ. राजेंद्र प्रसाद से लेकर कर्पूरी ठाकुर हुए। आज के समय में भारत की प्रगति समुद्री ,धरती और आकाश तीनों क्षेत्र में प्रगति कर रहा है।

राज्यपाल ने कहा :
राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने कहा की सभागार मे उपस्थित सभी लोग बधाई के पात्र है। आज उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का दीक्षा का अंत हो रहा है, शिक्षा का नही। शिक्षा बाहर से हर व्यक्ति, हर चुनौतियों से प्राप्त होगी। शिक्षा आप सभी के व्यक्तित्व का निर्माण करेगा तो ही राष्ट्र का निर्माण संभव हो पाएगा।

माननीय उप-राष्ट्रपति जी को स्मृति चिह्न देते कुलपति

सांसद ने विद्यार्थियों को दी बधाई :
सांसद सह पूर्व केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री ***राधा मोहन सिंह*** ने सभी उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को बधाई व मंगलकामना दी। दीक्षांत समारोह चंपारण के लिए गर्व का विषय है,जो इतनी भव्यता के साथ मनाया जा रहा है। विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत व समर्पण का फल आज उन्हें मिल रहा है। विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय के प्राण व धुरी हैं। भले आज यहां से उपाधि प्राप्त करके जा रहे हैं लेकिन उनका संबंध विश्वविद्यालय से सदैव रहेगा। छात्रों की प्रसिद्धि ही हमारे विश्वविद्यालय की भी प्रसिद्धि है। विद्यार्थियों से कहा कि जीवन का हर दिन सीखने का अनुभव होगा और हर दिन नई परीक्षा देनी होगी।

स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर रंगा-रंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों का हुआ आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक और साहित्य परिषद द्वारा द्वितीय दीक्षान्त समारोह के उपलक्ष्य में भव्य रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। राजा बाजार स्थित महात्मा गाँधी प्रेक्षागृह में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. शैलेष एन. झाला और श्रीमती नमिता श्रीवास्तवा उपस्थित थे। विश्वविद्यालय के कूलानुशासक सह अध्यक्ष सांस्कृतिक एवं साहित्य परिषद प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने अतिथियों का अंगवस्त्र एवं समृति चिन्ह के द्वारा स्वागत किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में मनमोहक कथक नृत्य की प्रस्तुति हुई। सम्पूर्ण कथक नृत्य की प्रस्तुति बनारस घराने से सम्बद्ध प्रसिद्ध कथक नर्तक अनुज मिश्र के निर्देशन में सम्पन्न हुई। अनुज मिश्र पारंपरिक संगीत परिवार में कलाकारों की तेरहवीं पीढ़ी और लखनऊ घराने के प्रतिपादक हैं। उनके पिता लेफ्टिनेंट पं. अर्जुन मिश्रा बहुत प्रसिद्ध और प्रसिद्ध कथक गुरु, नर्तक और कोरियोग्राफर थे। अनुज मिश्र अपने दादा पदमविभूषण पंडित बिरजू महाराज से भी कथक नृत्य सीखा है।

कथक नृत्य का शुभारम्भ विघ्नहर्ता श्रीगणेश के वंदना से हुई। उसके बाद भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण के जीवन दर्शन पर केंद्रित नृत्य की सुंदर प्रस्तुति अनुज अर्जुन मिश्र और उनकी टीम के कलाकारों. सिद्धि टंडन - मुख्य महिला डांसर, प्रज्ञांशी पाठक – नृत्यांगना, मैत्री चौहान - महिला नर्तका।, वंशिका शर्मा - महिला डांसर, आकृति पांडे - महिला डांसर, विवेक वर्मा - पुरुष नर्तक, कमल कुमार- पुरुष नर्तक द्वारा की गई।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजय श्रीवास्तव ने कहा कि कथक नृत्य हमारी सांस्कृतिक विरासत है। यह शास्त्रों के अनुसार संयोजित है। जिसमें भाव, लय और मुद्रा बहुत ही सम्प्रेषणीय होते है। उन्होंने कलाकारों के नृत्य की सराहना की। अंत में प्रसिद्ध कथक नर्तक अनुज मिश्र और उनकी टीम के कलाकारों का सम्मान कुलपति प्रो.संजय श्रीवास्तव द्वारा अंगवस्त्रम एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों की हजारों को संख्या में उपस्थिति थी। संचालन डॉ. स्वेता और डॉ. उमेश पात्रा ने की।

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024+जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी को मिला प्रो. वाहिद उद्दीन मलिक स्मारक पुरस्कार

भारतीय रसायन विज्ञान परिषद (ICC) द्वारा दिया गया सम्मान

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के भौतिक विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) देवदत्त चतुर्वेदी को भारतीय रसायन विज्ञान परिषद (ICC) द्वारा प्रतिष्ठित प्रो. वाहिद उद्दीन मलिक स्मारक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सम्मान भारतीय रसायन विज्ञान परिषद के वार्षिक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र के दौरान मॉडर्न कॉलेज ऑफ साइंस, आर्ट्स एंड कॉमर्स, गणेशखिंड, पुणे में प्रदान किया गया।

यह पुरस्कार उन्हें रसायन विज्ञान के क्षेत्र में उनके अनुकरणीय अनुसंधान और शिक्षण के लिए प्रदान किया गया। प्रो. चतुर्वेदी ने रसायन विज्ञान और भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में अद्वितीय उपलब्धियां हासिल की हैं। इससे पूर्व उन्हें युवा वैज्ञानिक पुरस्कार, टेट्राहेड्रोन सर्वाधिक उद्धत पेपर पुरस्कार, और सर्वोच्च प्रभाव कारक पुरस्कार जैसे कई प्रतिष्ठित सम्मान मिल चुके हैं।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने प्रो. चतुर्वेदी को इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए कहा, "प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी ने विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया है। मैं उनकी इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं। उनका यह सम्मान विश्वविद्यालय की शोध संस्कृति को और सुदृढ़ करेगा।"

प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रो. रंजीत कुमार चौधरी, प्रो. प्रणवीर सिंह, प्रो. प्रसून दत्त सिंह, प्रो. रंजीत कुमार चौधरी, प्रो. सुनील महावर, सभी विभाग के विभागाध्यक्षों एवं गणित विभाग के संकाय सदस्यों डॉ. शिव कुमार सिंह, डॉ. बबीता मिश्रा, डॉ. अमिताभ ज्ञान रंजन और डॉ. राजेश प्रसाद ने भी प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी को बधाई दी।

डॉ. अभिजीत को मिला आइसीएमआर शोध अनुदान

एमजीसीयू के रसायन विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. अभिजीत कुमार को भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आइसीएमआर) से दूसरा बड़ा शोध अनुदान प्राप्त हुआ है। इस प्रोजेक्ट का शीर्षक **"फेनिलकेटोनूरिया (पीकेयु) के लिए संभावित दवा उम्मीदवार की खोज: फेनिलएलनिन हाइड्रॉक्सिलेज के लिए उच्च आत्मीयता वाले पाइरीमिडीन आधारित फार्माकोलॉजिकल चापेरोन्स का डिज़ाइन और विकास"** है।

डॉ. अभिजित कुमार (फाइल फोटो)

इस अनुसंधान अनुदान में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जेनेटिक डिसऑर्डर सेंटर के डॉ. पवन दुबे और एमजीसीयू के जूलॉजी विभाग के डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन का सह-अन्वेषक के रूप में सहयोग शामिल है।

एक करोड़ रुपये से अधिक के बजट वाला यह प्रतिष्ठित अनुदान पीकेयु, एक महत्वपूर्ण आनुवंशिक विकार के लिए संभावित दवा उम्मीदवार विकसित करने का लक्ष्य रखता है। इससे पहले, डॉ. अभिजीत कुमार ने नीमैन-पिक रोग प्रकार सी (एनपीसी) के लिए संभावित दवा उम्मीदवार की खोज के लिए आईसीएमआर से एक महत्वपूर्ण शोध अनुदान प्राप्त किया था।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने डॉ. अभिजीत को बधाई देते हुए कहा कि यह अनुदान एमजीसीयू की नवाचारी अनुसंधान को बढ़ावा देने और महत्वपूर्ण स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। डॉ. अभिजीत कुमार और डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन का कार्य न केवल उनकी समर्पण का प्रमाण है बल्कि विश्वविद्यालय को एक अग्रणी वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र के रूप में स्थापित करता है।

रसायन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. रफीक उल इस्लाम और संकाय सदस्य डॉ. राकेश कुमार पांडे, डॉ. राजनीश नाथ तिवारी, डॉ. उत्तम कुमार दास, और डॉ. अनिल कुमार सिंह ने भी डॉ. अभिजीत कुमार को उनकी अद्वितीय उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई दी।

शोधार्थी बृजनंदन का आईसीएसएसआर फेलोशिप 2024 में हुआ चयन

शोधार्थी बृजनंदन (फाइल फोटो)

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा संचालित डॉक्टोरल फेलोशिप 2024 के लिए महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के मीडिया अध्ययन विभाग के शोधार्थी बृजनंदन पासवान का चयन हुआ है। बृजनंदन पासवान मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ परमात्मा कुमार मिश्र के निर्देशन में अंतरराष्ट्रीय विषय भारत और नेपाल के संबंध में मीडिया की भूमिका पर शोधरत है। शोधार्थी बृजनंदन पासवान पूर्व में यूजीसी द्वारा आयोजित पत्रकारिता एवं जनसंचार विषय से नेट परीक्षा भी पांच बार उत्तीर्ण कर चुके हैं। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने बृजनंदन पासवान को बधाई देते हुए कहा कि बृजनंदन पासवान की यह उपलब्धि मीडिया के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी।

मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने बधाई देते हुए कहा कि बृजनंदन पासवान के शोध कार्य से समाज को नई दिशा मिलेगी। उन्होंने बृजनंदन पासवान को मेधावी और सजग शोधार्थी बताया। सीएस एंड आईसीटी के डीन प्रो.रंजीत कुमार चौधरी ने इस उपलब्धि पर विभाग और छात्र बृजनंदन पासवान को बधाई देते हुए कहा की यह उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगी। शोध निर्देशक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने कहा कि शोधार्थी बृजनंदन पासवान परिश्रमी है और उनका शोध भारत और नेपाल के बीच संबंधों को लेकर एक नया आयाम स्थापित करेगा। विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील दीपक घोड़के, डॉ. साकेत रमण, डॉ. उमा यादव सहित शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों ने बृजनंदन पासवान को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने आई-कोल 2025 अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में किया संबोधन

दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित **I-KOAL 2025** अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में "डिजिटल युग में नवाचारपूर्ण पुस्तकालय प्रथाएँ: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के अनुरूप विकसित भारत २०४७ की ओर" विषय पर मंथन हुआ। इस अवसर पर महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। कार्यक्रम की मुख्य संरक्षक दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन थीं।

इस महत्वपूर्ण सम्मेलन में देश-विदेश के पुस्तकालय विज्ञान विशेषज्ञों, शिक्षाविदों एवं शोधकर्ताओं ने भाग लिया। अपने मुख्य अतिथि संबोधन में प्रो. संजय श्रीवास्तव ने पुस्तकालयों के भविष्य, डिजिटल तकनीकों की भूमिका और राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के प्रभावों पर विस्तृत चर्चा की।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव का संबोधन :

अपने सारगर्भित उद्बोधन में प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "ज्ञान किसी भी समाज की सबसे बड़ी संपत्ति होती है, और पुस्तकालय ज्ञान के इस भंडार के संरक्षक होते हैं। आज के डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिका सिर्फ पुस्तकों के भंडारण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि वे ज्ञान के वैश्विक आदान-प्रदान और नवाचार का केंद्र बन चुके हैं। डिजिटल पुस्तकालयों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग (ML), डेटा एनालिटिक्स जैसी अत्याधुनिक तकनीकों के उपयोग से हम न केवल सूचना तक आसान पहुंच बना सकते हैं, बल्कि अनुसंधान और शिक्षा को भी नए आयाम दे सकते हैं।"

उन्होंने आगे कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-२०२० के तहत पुस्तकालयों को स्मार्ट और डिजिटल बनाना समय की मांग है। उन्होंने बताया कि कैसे महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय ई-लाइब्रेरी, ओपन एक्सेस रिसोर्सेज, डिजिटल रिपॉजिटरी और रिसर्च डेटाबेस को अपनाकर अपने छात्रों और शोधकर्ताओं को वैश्विक ज्ञान से जोड़ने का कार्य कर रहा है।

"विकसित भारत २०४७ की परिकल्पना केवल आर्थिक या औद्योगिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान और नवाचार-आधारित समाज के निर्माण से भी जुड़ी हुई है। जब हम डिजिटल पुस्तकालयों को मजबूत करेंगे, तब हम न केवल अपने शोधकर्ताओं और छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शैक्षिक सामग्री प्रदान कर पाएंगे, बल्कि नवाचार और अनुसंधान के क्षेत्र में भारत को अग्रणी बना सकेंगे।"

उन्होंने जोर देते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों को शोध पत्रों की ऑनलाइन उपलब्धता, डिजिटल अभिलेखागार, और खुले स्रोत ज्ञान संसाधनों को बढ़ावा देने की दिशा में कार्य करना चाहिए। इस संदर्भ में उन्होंने महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में हाल ही में किए गए पुस्तकालय उन्नयन कार्यक्रम का उल्लेख किया और कहा कि यह छात्रों, शोधकर्ताओं और संकाय सदस्यों के लिए बेहद लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

देश-विदेश से आए पुस्तकालयाध्यक्षों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। चर्चा के दौरान इस बात पर विशेष बल दिया गया कि किताबी ज्ञान को डिजिटल युग में सहज, सुलभ और प्रभावी बनाने के लिए नई रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिए।

सम्मेलन के समापन सत्र में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन ने प्रो. संजय श्रीवास्तव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनका दृष्टिकोण और विचार इस सम्मेलन के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहे हैं। उन्होंने कहा कि डिजिटल पुस्तकालयों और नवाचारपूर्ण प्रथाओं के माध्यम से भारतीय शिक्षा को वैश्विक स्तर पर नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया जा सकता है।

अंत में, आयोजकों ने इस सफल अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के लिए सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

हर्षोल्लास के साथ मना 76वां गणतंत्र दिवस

• तिरंगा केवल स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं है, यह हमारे सामूहिक स्वप्न, एक आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित भारत का प्रतिनिधित्व करता है : प्रो संजय श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) ने 7 6 वां गणतंत्र दिवस उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ मनाया। समारोह की शुरुआत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने और राष्ट्रगान के साथ हुई।

अपने प्रेरणादायक भाषण में प्रो. संजय श्रीवास्तव ने भारतीय संविधान को राष्ट्र की आत्मा बताते हुए कहा, "तिरंगा केवल स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं है, यह हमारे सामूहिक स्वप्न—एक आत्मनिर्भर, सशक्त और विकसित भारत—का प्रतिनिधित्व करता है। यह हमें लगातार मेहनत करने, ऊँचे सपने देखने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा देता है।"

उन्होंने संविधान के मूल्यों—न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह केवल एक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक के लिए समावेशी और समृद्ध भविष्य

गणतंत्र दिवस समारोह में उपस्थित विश्वविद्यालय परिवार

गणतंत्र दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती विश्वविद्यालय की छात्राएं

की गारंटी है। उन्होंने कहा, "२६ जनवरी १९५० को लागू हुआ संविधान हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। यह हमारे राष्ट्र की आत्मा है।"

कुलपति ने सभी से राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका निभाने का आह्वान करते हुए कहा, "विकसित भारत का सपना केवल एक नारा नहीं है; यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। शिक्षा, नवाचार, और नैतिक मूल्यों के माध्यम से इस स्वप्न को साकार करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।"

उन्होंने विश्वविद्यालय की उपलब्धियों पर गर्व व्यक्त करते हुए एमजीसीयू को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उत्कृष्टता का प्रतीक बताया। उन्होंने छात्रों की प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता और प्रतिष्ठित राष्ट्रीय व बहुराष्ट्रीय कंपनियों में उनके चयन पर उन्हें बधाई दी। प्रो. श्रीवास्तव ने शोध परियोजनाओं में आईसीएसएसआर, डीएसटी और आईसीएमआर जैसे संस्थानों से वित्त पोषण मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त की, जो विश्वविद्यालय की उच्च शोध गुणवत्ता को दर्शाता है।

गांधी भवन के परिसर निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने अपने संबोधन में महात्मा गांधी के आदर्शों और शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर चर्चा की। उन्होंने कहा, "गांधी जी के सिद्धांत आज भी हमारे समाज के लिए मार्गदर्शक हैं, और हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलकर देश की प्रगति में योगदान देना चाहिए।"

समारोह में विश्वविद्यालय के छात्रों ने देशभक्ति से ओत-प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिसमें नृत्य और संगीत शामिल था। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के सभी विभागों के प्रमुख, संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्र उपस्थित थे। सभी ने मिलकर गणतंत्र दिवस की भावना का उत्साहपूर्वक अनुभव किया और राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लिया।

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में गणतंत्र दिवस पर 'उमंग' खेल उत्सव का शुभारंभ

उमंग फेस्ट के उद्घाटन सत्र में कुलपति का स्वागत करते खेल बोर्ड के उपाध्यक्ष, साथ में विश्वविद्यालय के कुलानुशासक

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) ने 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सप्ताह भर चलने वाले खेल उत्सव 'उमंग' का भव्य शुभारंभ किया। विश्वविद्यालय खेल बोर्ड द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में छात्रों, शिक्षकों और गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने विश्वविद्यालय की खेल संस्कृति को मजबूत करने के लिए कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। उन्होंने कहा कि एमजीसीयू न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता, बल्कि खेलों में भी श्रेष्ठता को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है। अगले शैक्षणिक वर्ष से विश्वविद्यालय में खेल कोटा के तहत प्रवेश की सुविधा शुरू की जाएगी, जिससे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को एमजीसीयू में प्रवेश लेकर अपनी प्रतिभा को निखारने का अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त, हम प्रतिष्ठित खेल संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (MoUs) पर हस्ताक्षर करेंगे, जिससे छात्रों को व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त होगा और उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता में वृद्धि होगी।

विश्वविद्यालय खेल बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा ने प्रतिभागियों और आयोजकों की सराहना करते हुए कहा, "खेल हमें जीवन के अमूल्य पाठ पढ़ाते हैं और छात्र के व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। 'उमंग' के माध्यम से हम छात्रों को शारीरिक फिटनेस अपनाने और नेतृत्व कौशल विकसित करने के लिए प्रेरित करना चाहते हैं। यह उत्सव एमजीसीयू की सर्वांगीण विकास की दृष्टि का प्रमाण है।"

'उमंग' के तहत क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, एथलेटिक्स और अन्य खेलों में प्रतिस्पर्धा होगी। यह उत्सव छात्रों को अपनी खेल प्रतिभा दिखाने और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा देने का मंच प्रदान करेगा।

साहित्य महोत्सव के प्रतिभागी विद्यार्थियों का सम्मान

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) के सांस्कृतिक और साहित्यिक परिषद द्वारा आयोजित साहित्य महोत्सव में विद्यार्थियों की अद्भुत प्रतिभा और रचनात्मकता का प्रदर्शन देखने को मिला। पिछले सप्ताह आयोजित इस महोत्सव में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को आज विशेष कार्यक्रम में सम्मानित किया गया।

इस महोत्सव में विद्यार्थियों ने कविता पाठ, एक्सटेम्पोर, भाषण और वाद-विवाद जैसे कार्यक्रमों में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने विद्यार्थियों की उपलब्धियों पर गर्व व्यक्त करते हुए कहा, "यह महोत्सव केवल साहित्य का उत्सव नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के विचारों, रचनात्मकता और बौद्धिकता को प्रकट करने का एक मंच है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास जगाते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में सहायक होते हैं।"

महोत्सव में विद्यार्थियों के प्रयासों की सराहना करते हुए एमजीसीयू के माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "एमजीसीयू एक जीवंत शैक्षणिक और सांस्कृतिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। साहित्य महोत्सव हमारी समग्र शिक्षा की दृष्टि का प्रमाण है, जो विद्यार्थियों को कक्षा के बाहर भी उत्कृष्ट बनने के लिए प्रेरित करता है।" उन्होंने कहा कि मुझे पूरी उम्मीद है कि इस तरह के कार्यक्रम भविष्य में साहित्यिक परिषद् द्वारा निश्चित ही और बड़े स्तर पर आयोजित किये जाएँगे तथा सभी विद्यार्थी इसमें बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे एवं अपनी रचनात्मकता को प्रदर्शित करेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

बताते चलें कि विद्यार्थियों में साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रतिभा व रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने और उनके चहुंमुखी विकास के वादे के साथ इस सम्मान समारोह का समापन हुआ।

सम्मानित किये गए प्रतिभागी :

कविता पाठ
लोकेश पांडे
मनीषा देवाकर
रूपेश

एक्सटेम्पोर
मृत्युंजय आज़ाद
सौरभ कुमार
अपूर्वा त्रिवेदी

भाषण
प्राची मिश्रा
सौरभ कुमार
श्रेया पांडे

वाद-विवाद
कुलदीप कुमार
कानू वैभव
मनीष कुमार

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

उमंग 2.0: एमजीसीयू में आयोजित खेल सप्ताह आयोजन, नई प्रतिभाएं आई सामने

व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए पढ़ाई के साथ खेल भी आवश्यक : प्रो संजय श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में खेल बोर्ड के तत्वाधान में यूनिवर्सिटी एथलेटिक फेस्ट 'उमंग-2025' का आयोजन हुआ। 26 जनवरी से 2 फरवरी तक चले इस खेल उत्सव के समापन समारोह की शुरुआत मंचासीन केविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव, खेल बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा, चीफ प्रॉक्टर प्रो. प्रसून दत्त सिंह, बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रंजीत कुमार चौधरी, सामाजिक विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. सुनील महावार ने संयुक्त रूप से किया। विवि खेल बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा ने कार्यक्रम के अध्यक्ष केविवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव को स्मृति चिह्न एवं पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया।समापन समारोह का विषय प्रवेश करते हुए खेल बोर्ड के उपाध्यक्ष प्रो. शिरीष मिश्रा ने बताया कि पिछले वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष विद्यार्थियों ने और अधिक बढ़चढ़ कर इस खेल उत्सव में भाग लिया और 750 से अधिक प्रतिभागी इसमें शामिल हुए हैं। क्रिकेट में 210 छात्र एवं 90 छात्रा, 45 पुरुष फैकल्टी एवं एडमिन तथा 14 महिला फैकल्टी ने भाग लिया। वॉलीबॉल में 72 छात्र एवं 32 छात्रा, कब्बड्डी में 90 छात्र एवं 45 छात्रा, टग ऑफ वॉर में 48 छात्र एवं 48 छात्रा, बैडमिंटन में 100 छात्र एवं 60 छात्रा, टेबल टेनिस में 20 विद्यार्थी, दौड़ में 90 विद्यार्थी, साथ ही शतरंज और कैरम में 170 विद्यार्थी व 40 शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मचारियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया।विषय प्रवेश के पश्चात प्रो. शिरीष मिश्रा ने सभी संकाय के संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, खेल बोर्ड के सदस्य, शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों तथा प्रतिभागियों के प्रति भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए आभार व्यक्त किया। इसके अलावा मानविकी एवं भाषा विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष सह चीफ प्रॉक्टर प्रो. प्रसून दत्त सिंह, बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रंजीत कुमार चौधरी, सामाजिक विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. सुनील महावार ने भी समापन समारोह को संबोधित करते हुए अपने - अपने विचार रखें।बताते चलें कि खेल उत्सव का यह कार्यक्रम 26 जनवरी से चल रहा था। इस खेल उत्सव के दौरान विश्वविद्यालय के गाँधी भवन स्थित मैदान में छात्र, छात्राओं, शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने क्रिकेट, कबड्डी, वॉलीबॉल, बैडमिंटन, कैरम, शतरंज, टेबल टेनिस, ताइक्वांडो, दौड़ और टग ऑफ वॉर में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। समापन समारोह के दौरान सभी संकायों के निदेशक, सभी विभागों के विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, शिक्षकेत्तर कर्मचारी, शोधार्थी, सकड़ों छात्र-छात्राएं आदि उपस्थित थें।समापन समारोह में आए सभी अतिथि, विद्यार्थी, शिक्षक एवं शिक्षेत्तर कर्मचारियों का स्वागत प्रो. शिरीष मिश्रा ने अपने संबोधन के द्वारा किया। कार्यक्रम का मंच संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. उमेश पात्रा एवं धन्यवाद ज्ञापन सह-प्राध्यापक डॉ. असलम खान ने किया।

कुलपति ने क्या कहा:

उमंग 2025 के अंतर्गत आयोजित खेल उत्सव के समापन समारोह को संबोधित करते हुए एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि यह काफी हर्ष का विषय है कि हमने 26 जनवरी से 2 फरवरी तक चले इतने बड़े आयोजन को आप सभी की सहभागिता के साथ सफलता पूर्वक संपन्न कर रहे हैं। विश्वविद्यालय के खेल बोर्ड ने प्रधानमंत्री जी के 'फिट इंडिया मूवमेंट' को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए इतने बड़े स्तर पर खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, इसके लिए खेल बोर्ड धन्यवाद का पात्र है। उन्होंने कहा कि विवि के खेल बोर्ड के गठन के पीछे का हमारा मुख्य उद्देश्य यह था कि हम अपने बीच की छुपी हुई प्रतिभाओं को सामने ला सकें। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के लिए पढ़ाई जितना महत्वपूर्ण है, उतना हीं खेल भी है। खेल व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक, एवं सामाजिक रूप से मजबूत बनाता है और जब हमारा शरीर व मन स्वस्थ होगा तभी हम पढ़ाई में भी अपना सौ प्रतिशत दे पाएंगे। आगे उन्होंने कहा कि पूरे खेल सप्ताह के दौरान सभी प्रतिभागियों ने अप्रतिम उत्साह दिखाया जो बहुत ही अच्छी बात है। इससे विश्वविद्यालय में एक सकारात्मक ऊर्जा का उत्सर्जन हुआ जो हमारे बीच पारिवारिक माहौल को स्थापित करने में महत्वपूर्ण साबित होगा। खेल सप्ताह में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागी तथा इसे सफल बनाने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वाले सभी लोग एवं इस आयोजन को प्रमुखता से समाज के बीच पहुंचाने में हमारा सहयोग करने वाले प्रेस-मीडिया के सभी बंधु धन्यवाद एवं बधाई के पात्र हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारे बच्चे आने वाले समय में देश का नाम अवश्य रौशन करेंगे।उन्होंने अगले साल के खेल उत्सव कार्यक्रम में लॉन्ग जंप, हाई जंप, शॉर्ट पुट, डिस्कस थ्रो, जैवलिन थ्रो, स्विमिंग, आदि जैसे खेलों को भी शामिल करने की भी सलाह दी। ताकि सभी तरह के खेलों में विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को निखार सकें।अपने संबोधन के अंत में माननीय कुलपति ने सभी विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं शैक्षणिक/गैर शैक्षणिक कर्मचारियों को फिट इंडिया की शपथ दिलाई और खेल उत्सव में सक्रिय प्रतिभागिता के लिए धन्यवाद दिया तथा अगले वर्ष और उत्साह के साथ खेल उत्सव में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

उमंग 2025 विजेता :

दौड़

पुरुष वर्ग (100 मीटर) -
आशीष कुमार
कमलेश कुमार गिरी
सूरज भान
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

पुरुष वर्ग (200 मीटर) -
पंकज कुमार सिंह
विशाल प्रताप सिंह,
श्री प्रशांत
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

महिला वर्ग (100 मीटर) -
कीर्थना सुनील पीएस
अदिति कुमारी
आयुषी कुमारी
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

महिला वर्ग (200 मीटर) -
अदिति कुमारी,
इशू परासर
कीर्थना सुनील पीएस
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

टेबल टेनिस

पुरुष वर्ग -
सूरज जयसवाल
ऋषि राज
अंकित राज
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

पुरुष वर्ग (टीचिंग और नॉन टीचिंग) -
डॉ. सुनील कुमार सिंह
डॉ. दुर्गेश्वर सिंह
डॉ. कमलेश कुमार
(प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः)

महिला वर्ग -
मुस्कान कुमारी
शबा नाज़
अनन्या यादव एवं मुस्कान सिंह
(प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय क्रमशः)

कबड्डी

पुरुष वर्ग - रॉयल कॉमर्स
महिला वर्ग - एमजीसीयू ग्लेडियेटर

टग ऑफ वॉर

पुरुष वर्ग - टग ऑनर एवं लाइब्रेरी साइंस
महिला वर्ग - विक्ट्री एवं गैलेक्सी गर्ल्स

क्रिकेट

पुरुष वर्ग - अनस्टोपेबल हंक्स
महिला वर्ग - द स्टॉर्म ब्रेकर्स
पुरुष (फैकल्टी) - पीच बर्नर्स
महिला (फैकल्टी) - ब्ला ब्ली ब्लू

वॉलीबॉल

पुरुष वर्ग - पावर हाउस
महिला वर्ग - एमजीसीयू ग्लेडिएटर

शतरंज

विद्यार्थी -
नितिन यादव
कल्याण गुरवे
नवनीत कुमार

टीचिंग और नॉन टीचिंग -
डॉ. सुनील कुमार सिंह
प्रो. अजेय कुमार गुप्ता

कैरम

विद्यार्थी -
सूरज भान
मो. शाहनवाज,
अंकित कुमार मिश्रा

एडमिन और नॉन टीचिंग -
शेफालिका मिश्रा
प्रिंस कुमार

फैकल्टी -
डॉ. कुंदन किशोर रजक
प्रो. अजेय कुमार गुप्ता

बैडमिंटन

एकल महिला -
रितिका पाण्डेय
सुमैया जहां
अदिति कुमारी व राजनंदनी गुप्ता
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

युगल महिला -
मनीषा कुमारी एवं अदिति शाह
श्रेया पांडेय एवं रागी राजस्वी
(विजेता एवं उपविजेता क्रमशः)

एकल महिला (टीचिंग एवं नॉन टीचिंग) -
शेफालिका मिश्रा
डॉ. स्नेहा चौरसिया
डॉ. अल्पिका त्रिपाठी
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

युगल महिला (टीचिंग एवं नॉन टीचिंग) -
शेफालिका मिश्रा एवं डॉ. स्नेहा चौरसिया
डॉ. बबीता मिश्रा एवं डॉ. श्वेता सिंह
(विजेता एवं उपविजेता क्रमशः)

एकल पुरुष
प्रताप यादव एवं स्वतंत्र साहू
आशीष कुमार एवं आयुष कुमार विश्वकर्मा
अंकित राज एवं दीपू कुमार
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

युगल पुरुष (टीचिंग एवं नॉन टीचिंग) -
डॉ. नीलभ श्रीवास्तव एवं डॉ. अभय विक्रम सिंह
डॉ. अरविंद कुमार शर्मा एवं डॉ. अनिल कुमार सिंह
डॉ. पवन कुमार एवं डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन
(प्रथम, द्वितीय, तृतीय क्रमशः)

उमंग 2025 के उप-विजेता :

क्रिकेट

पुरुष क्रिकेट प्रतियोगिता
मैनेजमेंट मेवरिक्स

महिला क्रिकेट प्रतियोगिता
मैनेजमेंट वॉरियर्स

पुरुष क्रिकेट (फैकल्टी)
चंपारण वॉरियर्स

महिला क्रिकेट (फैकल्टी)
रॉयल वॉरियर्स

वॉलीबॉल

पुरुष वॉलीबॉल प्रतियोगिता
ब्लैक बिस्ट

महिला वॉलीबॉल प्रतियोगिता
उड़ान

कबड्डी

पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता
अनस्टॉपेबल हंक्स

महिला कबड्डी प्रतियोगिता
गोल्डन गर्ल्स

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

परिसर प्रतिबिंब

ई-समाचार पत्र

www.mgcub.ac.in

parisarpratibimb@mgcub.ac.in

@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

"एचआईवी/ एड्स समस्या एवं समाधान" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में स्थापित सेहत केन्द्र द्वारा विश्व एड्स दिवस के अवसर पर "एचआईवी/एड्स समस्या एवं समाधान" विषय पर विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव थे। एड्स की जागरूकता हेतु राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार की प्रशंसा करते हुए माननीय कुलपति ने सेहत केन्द्र की जागरूकता विषयक गतिविधियों की सराहना की।

संगोष्ठी को संबोधित करते सेहत केन्द्र के समन्वयक डॉ बबलू पाल

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ दुर्गेश्वर सिंह, सहायक आचार्य वनस्पति विज्ञान ने अपने उद्बोधन में बताया एच आईवीऔर एड्स से संक्रमित मनुष्यों में संक्रमण की समस्या कैसे उत्पन्न हुई और 1990 के दशक में यह एक भयावह स्थिति का रूप ले चुका था। सरकार ने इस समस्या के निवारण के लिए रणनीतिक तरीके से योजनाबद्ध कार्य किया। जिसका सकारात्मक परिणाम भी आया। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य है 2030 तक देश को एचआईवी मुक्त करना। अपने उद्बोधन में उन्होंने इसकी जागरूकता हेतु एचआईवी/एड्स समस्या की पहचान और उससे बचने के उपायों पर विशेष बल दिया।

कार्यक्रम के विशिष्ट वक्ता डॉ अनुपम कुमार वर्मा, सहायक आचार्य, समाज कार्य विभाग ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश को एचआईवी मुक्त बनाने हेतु सरकार के लक्ष्य की पूर्ति हेतु समाज में इसकी समस्या एवं समाधान विषयक जागरूकता की आवश्यकता है। समाज जागरूकता अभियान के तहत ही इसका समाधान सम्भव है। डॉ वर्मा ने कहा कि विश्वविद्यालय के सेहत केन्द्र के माध्यम से इस कार्य को सफल बनाया जा सकता। कार्यक्रम में सेहत केन्द्र के समन्वयक डॉ बबलू पाल, सेहत केन्द्र के सह समन्वयक डॉ गोविंद प्रसाद वर्मा, हिन्दी विभाग के सहायक आचार्य डॉ श्याम नंदन सहित अनेक शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विद्यार्थियों ने भी भाग लिया।

मानवाधिकार दिवस पर विशेष व्याख्यान आयोजित

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा मानवाधिकार दिवस के अवसर पर एक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य संरक्षक कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य अतिथि के रूप में सामाजिक विज्ञान संकाय के संकायाध्यक्ष प्रो. सुनील महावर ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। साथ ही, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के निदेशक प्रो. राजेश शर्मा ने बीज वक्ता के रूप में विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम की शुरुआत विभागाध्यक्ष डॉ. सरिता तिवारी द्वारा स्वागत भाषण और विषय प्रवेश से हुई। उन्होंने मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा पत्र की चर्चा करते हुए बताया कि इसे तैयार करने में श्रीमती एलेनोर रूजवेल्ट के अथक प्रयासों का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने कहा, "उनके इस महान कार्य को उस समय के अमेरिका के राष्ट्रपति ने 'वीमेन ऑफ द वर्ल्ड' का सम्मान दिया।"

मुख्य अतिथि प्रो. सुनील महावर ने अपने संबोधन में कहा कि मानवाधिकार समाज में समानता और न्याय सुनिश्चित करने का आधार हैं। वहीं, प्रो. राजेश शर्मा ने अपने वक्तव्य में मानवाधिकारों के ऐतिहासिक और वैश्विक संदर्भों पर प्रकाश डाला।

प्रो. प्रसून दत्त ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्राकृतिक अधिकार ही मानवाधिकारों के मूल स्रोत हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि समाज में हर व्यक्ति के लिए समान अवसर और सम्मान सुनिश्चित करना ही मानवाधिकारों की सच्ची परिभाषा है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. नरेंद्र आर्य ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। उन्होंने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखने की अपील की।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। कार्यक्रम ने मानवाधिकारों की महत्ता और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर गहन विचार-विमर्श को प्रोत्साहित किया।

तमिल और संस्कृत का संगम आवश्यक - प्रो. श्रीप्रकाश

भारतीय भाषा उत्सव के अवसर पर विश्वविद्यालय में एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर के संस्कृत विभाग के सेवानिवृत्त आचार्य प्रो. श्रीप्रकाश पाण्डेय रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता गाँधी भवन परिसर के निदेशक एवं विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। कार्यक्रम का आरम्भ संस्कृत विभाग के शोधच्छात्र गोपाल कृष्ण मिश्र के द्वारा लौकिक मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् कार्यक्रम के संयोजक डॉ. श्याम कुमार झा ने भारतीय भाषा उत्सव के विषय में प्रकाश डालते हुए बताया कि विभिन्न भाषाओं में एक दूसरे से सामंजस्य रखते हुए बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। इन शब्दों के अध्ययन से भाषाओं में सामीप्य ज्ञात हो सकता है। आपने तमिल भाषा के प्रतिनिधि कवि सुब्रमण्यम भारती के जीवन पर भी प्रकाश डाला। सामाजिक विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील महावर ने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कृति का मूल भाषाएँ ही हैं और इनमें भारतीय भाषाओं को एक साथ जोड़ने के तत्त्व निहित हैं। कार्यक्रम में अतिथि वक्तव्य हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि सुब्रह्मण्यम भारती की तुलना मैथिली शरण गुप्त से की जा सकती है और उनका भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं भाषाविद् प्रोफेसर श्रीप्रकाश पाण्डेय ने अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि जिस प्रकार हमें अपनी भाषा प्रिय लगती है उसी प्रकार तमिल क्षेत्र वालों को तमिल भाषा प्रिय लगती है। तमिल भाषा पर संस्कृत का अत्यन्त प्रभाव दिखाई पड़ता है। प्रो. पाण्डेय ने उदाहरण देते हुए बताया कि वाल्मीकि रामायण का प्रभाव तमिल भाषा में रचित कम्ब रामायण पर दिखाई पड़ता है। संस्कृत भाषा किसी भी भाषा के विरोध में नहीं है, अपितु पूरक है। किसी भी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, राजनैतिक, चारित्रिक और सांस्कृतिक उत्कर्ष में संस्कृत भाषा का महत्वपूर्ण योगदान है। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह जी ने कहा कि अपनी मातृभाषा के साथ ही दूसरों की मातृभाषा का भी आदर करना चाहिए, जिससे आपस में सामंजस्य बना रहे। प्रो. सिंह ने आगे कहा कि समता के लिए भाषिक एवं वैचारिक समानता की भी आवश्यकता होती है। अतः भाषिक प्रतिरोध न करते हुये सभी भाषाओं का आदर करते हुये उन्हें सीखने के प्रति भी प्रवृत्त होना चाहिए।

कार्यक्रम के अन्त में धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. बबलू पाल ने किया। आपने समस्त अभ्यागत अतिथियों का धन्यवाद करते हुये धर्मपूर्वक आचरण की बात की, जिसका सभी भारतीय भाषाओं में स्पष्ट उल्लेख मिलता है।

कार्यक्रम का सफल संचालन संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. विश्वजीत बर्मन ने किया।

उक्त कार्यक्रम में डॉक्टर सरिता तिवारी, डॉ नरेंद्र आर्य, डॉ मुकेश कुमार, डॉ पंकज कुमार,डॉ अनुपम वर्मा, डॉ नरेन्द्र सिंह, डॉ उपमेश तलवार, डॉ युगल किशोर दाधीच सहित विभिन्न विभागों के आचार्यगण तथा शोध छात्र उपस्थित रहे।

"एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के अन्तर्गत पौधारोपण

राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रही वर्तमान सरकार प्रकृति से जुड़कर जीवन जीने की प्राचीन भारतीय संस्कृति के महत्व को समझते हुए तथा पर्यावरण की वैश्विक समस्या के समाधान हेतु प्रयत्नशील है। प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकतानुसार उपयोग करना भारतीय जीवन शैली का मूल है। पाश्चात्य संस्कृति प्राकृतिक संसाधनों के तीव्र दोहन की संस्कृति से पोषित है जिसका प्रभाव भारतीय जनमानस पर भी पड़ा, परिणामस्वरूप अनेक भौतिक समस्याएं जन्म ले लीं। इन सबको ध्यान में रखते हुए वर्तमान सरकार प्रकृति के साथ जुड़कर जीवन जीने की प्राचीन भारतीय संस्कृति के संकल्पों की पुनर्स्थापना हेतु कृत संकल्पित है।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी ,बिहार भी राष्ट्र के उन्हीं प्राचीन भारतीय संकल्पों को जनमानस के बीच पहुँचाने तथा उन्हें भारतीय जीवन शैली को को अपनाने हेतु प्रेरित करने के लिए प्रतिबद्ध है। भावी पीढियों को स्वच्छ प्रकृति प्रदान करने के संकल्प के साथ माननीय कुलपति जी ने विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर, गाँधी भवन परिसर में आयुर्वेदीय तथा अन्य प्राकृतिक पौधों का रोपण किया तथा सभी शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ जुड़कर जीवन जीने का संकल्प लेने का आग्रह किया।

वृक्षारोपण के इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलानुशासन प्रो प्रसून दत्त सिंह, माननीय कुलपति के विशेष कार्याधिकारी डॉ पाथलोथ ओंकार, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा, सह छात्र कल्याण अधिष्ठाता डॉ.. बबलू पाल, संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. बिश्वजीत बर्मन, समाज कार्य विभाग के सहायक आचार्य डॉ. अनुपम कुमार वर्मा तथा अन्य विभागों के शिक्षक एवं विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

"फंक्शनल ऑक्साइड्स" पर राष्ट्रीय सम्मेलन (NCFO-2024) का आयोजन

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार (एमजीसीयू) के भौतिकी विभाग ने "फंक्शनल ऑक्साइड्स में हालिया प्रगति" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन (NCFO-2024) का आयोजन किया। यह सम्मेलन बृहस्पति सभागार में मिश्रित मोड में संपन्न हुआ, जिसमें देशभर के प्रतिष्ठित भौतिक वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं और छात्रों ने भाग लिया। सम्मेलन में फंक्शनल ऑक्साइड सामग्री में नवीनतम प्रगति, नवाचार और चुनौतियों पर चर्चा की गई।

उद्घाटन समारोह:

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन और मां सरस्वती की वंदना के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा के कुलपति एवं प्रतिष्ठित भौतिक वैज्ञानिक प्रो. पी.के. बाजपेई थे। अन्य प्रमुख अतिथियों में स्कूल ऑफ फिजिकल साइंसेज के डीन प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी, भौतिकी विभागाध्यक्ष प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ संकाय सदस्य प्रो. संतोष कुमार त्रिपाठी और सम्मेलन के संयोजक प्रो. अजय कुमार गुप्ता शामिल थे।

कार्यक्रम में अतिथि का स्वागत करते विभाग के प्राध्यापक

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं एम.एससी. छात्र भी उपस्थित रहे, जिनमें प्रमुख रूप से प्रो. बृजेश पांडे (जैव प्रौद्योगिकी विभाग), डॉ. मुकेश कुमार (शिक्षा विभाग) और डॉ. अखिलेश कुमार सिंह (जैव प्रौद्योगिकी विभाग) शामिल थे।

उद्घाटन सत्र में प्रो. देवदत्त चतुर्वेदी ने फंक्शनल ऑक्साइड सामग्री की व्यापक उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सम्मेलन के संयोजक प्रो. अजय कुमार गुप्ता ने कार्यक्रम के उद्देश्य और महत्व पर चर्चा की। वहीं, प्रो. सुनील कुमार श्रीवास्तव और प्रो. संतोष कुमार त्रिपाठी ने फंक्शनल ऑक्साइड्स के क्षेत्र में हुई प्रगति, उनकी संभावनाओं और भविष्य की चुनौतियों पर बात की।

मुख्य वक्ता प्रो. पी.के. बाजपेई ने "आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में ऑक्साइड सामग्री का बढ़ता महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने पेरोव्स्काइट जैसे ऑक्साइड्स के ऊर्जा भंडारण, उन्नत इलेक्ट्रॉनिक्स और सेंसर तकनीकों में योगदान पर जोर दिया।

तकनीकी सत्र:

सम्मेलन में विविध तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिनमें फंक्शनल ऑक्साइड सामग्री के संश्लेषण, प्रयोगात्मक और सैद्धांतिक विश्लेषण और उनकी उन्नत तकनीकों (जैसे फ्यूल सेल्स, अर्धचालक, और ऑटोमोबाइल्स) में भूमिका पर चर्चा की गई।

प्रमुख वक्ताओं में डॉ. टी.जी. रेड्डी और डॉ. पी. रामबाबू (भौतिकी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर), डॉ. विजय राज सिंह (केंद्रीय विश्वविद्यालय, गया), डॉ. अनुप कुमार शुक्ल (एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा), और डॉ. प्रदीप दास (जीजीवी, बिलासपुर) शामिल थे। इन सत्रों में बहु-फेरोइक ऑक्साइड्स, ऑक्साइड सामग्री के संरचनात्मक गुण और सह-डॉप्ड $BiFeO_3$ पतली फिल्मों के चुंबकीय गुण जैसे विषयों पर गहन चर्चा हुई।

समापन समारोह:

सम्मेलन के समापन सत्र में शोधार्थियों ने अपने पोस्टर और मौखिक प्रस्तुतियों के माध्यम से अपने शोध कार्यों का प्रदर्शन किया। इस सत्र ने शैक्षणिक संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित किया।

समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इसमें प्रो. शिरीष मिश्रा (वाणिज्य विभाग), प्रो. सुनील महावर (गांधी और शांति अध्ययन विभाग), डॉ. नीलाभ श्रीवास्तव, डॉ. पवन कुमार, डॉ. स्वेता सिंह और डॉ. जुगल किशोर दाधीच सहित कई संकाय सदस्य उपस्थित रहे।सम्मेलन का समापन डॉ. अरविंद कुमार शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

विश्व हिन्दी दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

विश्वविद्यालय के हिंदी साहित्य सभा द्वारा विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने की। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. विमलेश कुमार सिंह मुख्य वक्ता तथा संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा विशिष्ट वक्ता के रूप में उपस्थित थे। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन की वर्षगांठ के अवसर पर 2006 से हर वर्ष 10 जनवरी को विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य हिन्दी का वैश्विक स्तर पर प्रचार-प्रसार करना है।

संगोष्ठी की शुरुआत साहित्य सभा के सचिव विकास कुमार के स्वागत वक्तव्य से हुई। डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने विश्व हिन्दी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, "आज हिन्दी संसार की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। लगभग पूरी दुनिया में हिन्दी भाषी मौजूद हैं। विश्व हिन्दी दिवस तभी सफल होगा जब हिन्दी संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनेगी।"

मुख्य वक्ता डॉ. विमलेश कुमार सिंह ने कहा, "हिन्दी आज पूरी दुनिया में एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है और इसके प्रचार-प्रसार में विदेशी विद्वानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।"

विशिष्ट वक्ता डॉ. श्याम कुमार झा ने कहा, "हिन्दी आज वैश्विक भाषा के रूप में लगातार विकसित हो रही है। वर्तमान भारत सरकार के नेतृत्व में हिन्दी के विकास को और अधिक बल मिला है।"

कार्यक्रम में बिना चिक बराइक, रूपेश, मनु भगत और अन्यया ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए, जबकि मुकेश कुमार ने काव्यपाठ किया। संगोष्ठी का संचालन हिन्दी विभाग के शोधार्थी प्रतीक कुमार ओझा और धन्यवाद ज्ञापन परास्नातक द्वितीय वर्ष के छात्र कुलदीप कुमार ने किया।

महात्मा गांधी की 77वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दी गई श्रद्धांजलि

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के गाँधी भवन परिसर में गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 77वीं पुण्यतिथि के अवसर पर पुष्पांजलि अर्पण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव द्वारा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ।

इस अवसर पर कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने चंपारण सत्याग्रह का उल्लेख करते हुए गांधी जी के जीवन और उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गांधी जी ने सत्य और अहिंसा के माध्यम से समाज में बदलाव का जो संकल्प लिया, उसे आत्मसात करके हम उनके प्रति अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं। उन्होंने सत्य और अहिंसा को अपने जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। साथ ही उन्होंने छात्रों और शोधार्थियों से आग्रह किया कि वे गांधी जी के जीवन और विचारों पर शोध कार्य करें। उन्होंने विश्वविद्यालय पुस्तकालय में गाँधी जी से संबंधित पुस्तकों के संग्रह को और समृद्ध करने का सुझाव भी दिया।

कार्यक्रम में गाँधीजी के प्रिय भजनों और लोकगीतों की मनमोहक प्रस्तुति ऋत्विज भारद्वाज और उनकी टीम द्वारा की गई, जिसने पूरे वातावरण को गाँधीमय बना दिया।

इस अवसर पर गांधी भवन परिसर के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. जुगल किशोर दधीच, डॉ. असलम ख़ान, डॉ. नरेंद्र आर्य, डॉ. कैलाश प्रधान, डॉ. श्याम कुमार झा, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. अभय विक्रम सिंह, डॉ. अनुपम वर्मा, डॉ. श्वेता, डॉ. पैथलोथ ओंकार, डॉ. मनीषा, डॉ. बबलू पाल, डॉ. ओम प्रकाश समेत कई प्राध्यापक और छात्र-छात्राएँ उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का कुशल संचालन कार्यक्रम संयोजक डॉ. अम्बिकेश त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में गांधी जी के विचारों और आदर्शों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने के उद्देश्य से विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

प्रबंधन विज्ञान विभाग के छात्र सावन की ज़ेबैक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड में एचआर-एजीक्यूटिव के पद पर नियुक्ति

एमजीसीयू के प्रबंधन विज्ञान विभाग के छात्र सावन कुमार सिंह ने ज़ेबैक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड में एचआर-एग्जीक्यूटिव (रिक्रूटर) के पद पर नियुक्ति प्राप्त की है।

इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, "सावन कुमार सिंह की इस सफलता ने यह सिद्ध कर दिया है कि महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय की शिक्षा प्रणाली छात्रों को उनके लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। हम उन्हें उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं देते हैं।"

वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. शिरीष मिश्रा ने कहा, "सावन की इस उपलब्धि ने हमारे संकाय की प्रतिष्ठा को और बढ़ाया है। यह दर्शाता है कि हमारा विश्वविद्यालय छात्रों को उनके करियर में ऊंचाइयों तक पहुंचाने में सक्षम है। सावन की यह सफलता अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी।"

प्रबंधन विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा ने भी इस सफलता पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, "यह हमारे विभाग के लिए गर्व का क्षण है। सावन ने अपनी मेहनत और समर्पण से न केवल अपने सपने को साकार किया है, बल्कि अन्य छात्रों के लिए भी एक आदर्श प्रस्तुत किया है।"

विभाग के अन्य शिक्षकों, डॉ. अल्का लालहल, श्री अरुण कुमार और डॉ. स्वाति कुमारी ने भी सावन को बधाई दी और उनकी इस उपलब्धि की सराहना की।

इस अवसर पर सावन कुमार सिंह ने कहा, "यह सफलता मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मैं इसके लिए अपने परिवार का आभार व्यक्त करने के साथ साथ महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय और प्रबंधन विज्ञान विभाग का हार्दिक धन्यवाद करता हूं, जिन्होंने मेरी शिक्षा यात्रा में निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन दिया। मैं अपने करियर के इस नए अध्याय की शुरुआत करने के लिए उत्साहित हूं।"

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद द्वारा द्वि-दिवसीय साहित्यिक महोत्सव का आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद द्वारा द्वि-दिवसीय साहित्यिक महोत्सव 2025 का शुभारंभ गाँधी भवन स्थित नारायणी कक्ष में हुआ। आयोजन के प्रथम दिन पहले चरण में वाद- विवाद प्रतियोगिता तथा दूसरे चरण में एक्सटेम्पोर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। वाद-विवाद प्रतियोगिता का विषय "भारतीय पौराणिक कथाएं सांस्कृतिक ज्ञान का खजाना या वैज्ञानिक सोच के लिए एक बाधा" था। कार्यक्रम के संरक्षक विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। प्रतियोगिता सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के अध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

प्रतियोगिता के प्रथम चरण वाद-विवाद प्रतियोगिता में स्वागत वक्तव्य देते हुए प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के भविष्य को एक नई दिशा देने में मदद करेगी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों में छुपी प्रतिभाओं को सामने लाना और बेहतर वक्ता के रूप में स्थापित करना प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य है। सम्प्रेषण एक कला है। समय का ध्यान रखते हुए विषय पर केंद्रित प्रस्तुति और वाणी का संतुलन भाषण कला में बहुत मायने रखता है।

साथ ही इस तरह के प्रतियोगिता से विद्यार्थियों का मानसिक विकास भी होगा।

वाद-विवाद प्रतियोगिता के निर्णायक भौतिकी विभाग की सहायक आचार्या डॉ. स्वेता सिंह और जूलॉजी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. श्याम बाबू प्रसाद और समन्वयक समाज शास्त्र विभाग की सहायक आचार्य डॉ. श्वेता और हिंदी विभाग की सहायक आचार्या डॉ. गरिमा तिवारी एवं डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा थे।

आशु भाषण प्रतियोगिता में के संयोजक दल के सेठ प्रतिभागी और जज

वाद-विवाद प्रतियोगिता का सत्र बहुत रोमांचक रहा जहां विद्यार्थियों ने "भारतीय पौराणिक कथाएं सांस्कृतिक ज्ञान का खजाना या वैज्ञानिक सोच के लिए एक बाधा" विषय पर पक्ष व विपक्ष में अपनी बातें रखी। प्रतियोगिता के विजेता हिंदी विभाग के कुलदीप थे। कुलदीप ने बहुत सारगर्भित तथ्यों की प्रस्तुति की। उन्होंने पौराणिक कथाओं को वैज्ञानिकता से परिपूर्ण और समाज के लिए कल्याणकारी बताया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा ने किया।

प्रतियोगिता के दूसरे चरण में आशु भाषण (एक्सटेम्पोर) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। एक्सटेम्पोर प्रतियोगिता के संयोजक संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. श्याम कुमार झा एवं मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र थे। निर्णायक की भूमिका में संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. बबलू पाल एवं गांधी एवं शांति अध्ययन के सहायक आचार्य डॉ. अभय विक्रम सिंह थे।

प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने बढ़ चढ़ कर अपनी भागीदारी सुनीश्चित की।

स्वागत उद्बोधन में डॉ. श्याम कुमार झा ने कहा कि आशु प्रतियोगिता के लिए आवश्यक है कि प्रतिभागी में सामान्य विषयों की आवश्यक समझ हो। इस तरह के आयोजन से विद्यार्थियों में भाषण कला के साथ महत्वपूर्ण विषयों को जानने, समझने और पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के चातुर्दिक विकास को कृत संकल्पित है जिसकी परिणति है इस तरह के प्रतियोगिता का आयोजन।

आशु भाषण प्रतियोगिता के प्रथम स्थान के विजेता अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थी मृत्युंजय आजाद रहे। वहीं दूसरे स्थान पर मीडिया अध्ययन विभाग के सौरभ सिंह व तीसरे स्थान पर मीडिया विभाग की अपूर्वा त्रिवेदी रही।धन्यवाद ज्ञापन डॉ परमात्मा कुमार मिश्रा ने किया। प्रथम स्थान पर विजयी प्रतिभागी को गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2025 को नकद पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र और द्वितीय व तृतीय स्थान पर विजयी प्रतिभागी को प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में जज को सम्मानित करते प्रो. प्रसून दत्त सिंह एवं संयोजक

प्रतियोगिता में हिंदी विभाग की सहायक आचार्या डॉ. आशा मीना सहित विभिन्न विभागों के शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति थी।

साहित्यिक महोत्सव के दूसरे दिन भाषण प्रतियोगिता और स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक विश्वविद्यालय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव थे। अध्यक्षता सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परिषद के अध्यक्ष प्रो प्रसून दत्त सिंह ने किया। प्रतियोगिता के प्रथम चरण में भाषण प्रतियोगिता 'डिजिटल युग में पुराने पीढ़ी के मूल्यों की प्रासंगिता' विषय पर आयोजित हुई।

इस अवसर पर प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने छात्रों का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि वे अपना आत्मविश्व बनाए रखें। जीत हार मायने नहीं रखती , बल्कि प्रतियोगिता में भाग लेना सबसे अहम है। स्वागत उद्बोधन समाजकार्य विभाग के सहायक आचार्य एवं प्रतियोगिता संयोजक डॉ. अनुपम कुमार वर्मा ने दिया। निर्णायक मंडल में प्रो. सुनील महावर, डीन, स्कूल ऑफ सोशल साइंस और डॉ. पंकज कुमार, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग थे। प्रतियोगिता में कुल 48 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। यह सत्र काफी रोमांचक रहा जहां विद्यार्थियों ने डिजिटल दौर में पुराने जमाने के संस्कार और जीवन के सिद्धांतों के बारें में अपने अपने विचार रखे। निर्णायक मंडल द्वारा विजेताओं का चयन किया गया, जिसमें मीडिया अध्ययन विभाग की छात्रा प्राची मिश्रा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं दूसरे स्थान पर मीडिया अध्ययन विभाग के सौरभ कुमार सिंह और तीसरे स्थान पर श्रेया ने जीत हासिल की।

प्रोफेसर सुनील महावर ने प्रतिभागियों की सराहना करते हुए कहा कि नई तकनीक को अपनाना गलत नहीं है पर इस वजह से अपने मूल्यों को भूलना गलत है। भाषण प्रतियोगिता को सफल बनाने में डॉ. कल्याणी हाजिरी, अंग्रेजी विभाग और डॉ. कुंदन किशोर रजक, जूलॉजी विभाग का विशेष योगदान था।

प्रतियोगिता के दूसरे चरण में प्रतिभागियों ने स्वरचित कविताओं के माध्यम से अपने भावनाओं को अभिव्यक्त किया। अध्यक्षता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया और मुख्य अतिथि के तौर पर भीमराव अम्बेडकर, विश्वविद्यालय के प्रो. मनोज कुमार उपस्थित रहे। सारगर्भित उद्बोधन में प्रो. मनोज ने कहा कि हमारी संस्कृति तभी आगे बढ़ेगी जब इस तरह के साहित्यिक आयोजन होंगे। उन्होंने कहा कि संस्कृति को उन्नति के रास्ते पर पहुँचाने की हर सम्भव कोशिश करनी चाहिए। निर्णायक मंडल में प्रो. राजेंद्र बड़गुजर, हिंदी विभाग और डॉ. श्वेता, सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र थी।कविता पाठ सत्र में कुल 35 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागियों ने अपने मनोभावों को बहुत खूबसूरत शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत किया। निर्णायक मंडल द्वारा विजेताओं के नामों की घोषणा हुई। जिसमें प्रथम स्थान पर पीएचडी शोधार्थी लोकेश पांडेय विजयी रहे।वहीं दूसरे स्थान पर मनीष कुमार व तीसरे स्थान पर हिंदी विभाग के रूपेश ने कब्जा जमाया। धन्यवाद ज्ञापन प्रतियोगिता की संयोजिका डॉ मनीषा रानी, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र ने की। प्रतियोगिता को सफल बनाने में संयोजिका डॉ. आशा मीना का विशेष योगदान था। प्रतियोगिता में डॉ. रश्मि श्रीवास्तवा सहित शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति थी।

प्रो. सुनील महावर बने भारतीय गांधीवादी अध्ययन सोसायटी के संयुक्त सचिव

मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी हैदराबाद में आयोजित इंडियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज के 45वें राष्ट्रीय अधिवेशन में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के आचार्य, समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष और सामाजिक विज्ञान के संकाय अध्यक्ष, प्रो. सुनील महावर को 2025-27 के कार्यकाल के लिए सर्वसम्मति से संयुक्त सचिव निर्वाचित किया गया। प्रो. महावर ने बताया कि अधिवेशन में 20 सदस्यीय कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया है। इस अधिवेशन में उड़ीसा के प्रो. एस. सी. जेना को अध्यक्ष, महाराष्ट्र के नृपेन्द्र मोदी, तेलंगाना के प्रो. मोहम्मद फ़रियाद और पंजाब के प्रो. मनीष शर्मा को उपाध्यक्ष, राजस्थान के प्रो. सीताराम चौधरी को महासचिव और डॉ. बाबूलाल देवंदा को कोषाध्यक्ष तथा अन्य कार्यकारिणी सदस्यों का चुनाव किया गया।

प्रो. महावर, गांधीवादी दर्शन के अध्ययन और शिक्षण क्षेत्र में अपने विद्वत्तापूर्ण कार्य के लिए जाने जाने वाले एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद हैं, जो गांधीवादी विचारों के संरक्षण और प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध हैं। वे कई वर्षों से सोसायटी के सक्रिय सदस्य रहे हैं, उन्होंने पहले भी गांधीवादी मूल्यों के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से कई परियोजनाओं में योगदान दिया है, खासकर युवा पीढ़ी के बीच। अपनी नई भूमिका में, प्रो. महावर का लक्ष्य शांति, स्थिरता और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के समाज के मिशन को आगे बढ़ाना है, जो भारत और दुनिया के लिए महात्मा गांधी के दृष्टिकोण के सभी केंद्रीय सिद्धांत हैं।

अपने चुनाव के बाद, प्रो. महावर ने उन पर रखे गए भरोसे के लिए आभार व्यक्त किया और समाज की पहुंच और शोध पहलों को बढ़ाने के अपने लक्ष्यों को रेखांकित किया। उन्होंने गांधीवादी विचारों को मार्गदर्शक ढांचे के रूप में उपयोग करते हुए वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए अभिनव दृष्टिकोण की आवश्यकता पर जोर दिया।

प्रो० महावर के विश्वविद्यालय आगमन पर उनके साथी एवं सहकर्मियों द्वारा उन्हे बधाई दी गई तथा पुष्प गुच्छ और शॉल भेंट कर उनका स्वागत किया जिसमें विश्वविद्यालय के मुख्य कुलानुशासक एवं गाँधी भवन के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, शिक्षा संकाय के अध्यक्ष डॉ० मुकेश कुमार, राजनीति विज्ञान विभाग के डॉ० नरेंद्र कुमार आर्य और डॉ० नरेंद्र सिंह, समाज कार्य विभाग के डॉ० उपमेश कुमार और डॉ० अनुपम कुमार वर्मा व संस्कृत विभाग के डॉ० बबलू पाल तथा शिक्षा अध्ययन विभाग की डॉ० रश्मि श्रीवास्तव और कई छात्र-छात्राओं ने बधाई देकर उनका स्वागत किया।

रामकृष्ण मिशन के सहयोग से पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) के गाँधी भवन में रामकृष्ण मिशन के सहयोग से 'भारतीय ज्ञान परंपरा' विषय पर एक भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्देश्य छात्रों को स्वामी विवेकानंद के आदर्शों, भारतीय दार्शनिक परंपराओं और आध्यात्मिक ज्ञान से परिचित कराना था।

इस अवसर पर गांधी भवन के परिसर निदेशक प्रो. प्रसून दत्त, विभिन्न विभागों के प्राध्यापक, शोधार्थी एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। प्रदर्शनी में भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिषद, वेदांत, योग, ध्यान और स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायक विचारों पर आधारित सैकड़ों पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया।

इस आयोजन पर अपने विचार व्यक्त करते हुए परिसर निदेशक प्रो. प्रसून दत्त ने कहा, "स्वामी विवेकानंद के विचार केवल प्रेरणा नहीं, बल्कि आत्मविकास और राष्ट्रनिर्माण का आधार हैं। उनका मानना था कि एक सशक्त भारत की नींव शिक्षा और ज्ञान पर टिकी है। यह पुस्तक प्रदर्शनी छात्रों को भारतीय चिंतन परंपरा की गहराई से अवगत कराने का एक महत्वपूर्ण अवसर है, जिससे वे न केवल अपने व्यक्तित्व को निखार सकें, बल्कि समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकें।"

छात्रों ने इस प्रदर्शनी को ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि यह उनके बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में सहायक सिद्ध होगी।

प्रदर्शनी ने न केवल छात्रों को स्वामी विवेकानंद के विचारों से जोड़ने का कार्य किया, बल्कि भारतीय संस्कृति और दर्शन को आत्मसात करने की प्रेरणा भी दी। यह आयोजन विद्यार्थियों के बीच भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति नई जागरूकता और रुचि पैदा करने में सफल रहा।

प्राणीशास्त्र विभाग में फ्रेशर पार्टी का भव्य आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्राणीशास्त्र विभाग में एम.एससी.के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित फ्रेशर पार्टी एक उल्लासमय और यादगार अनुभव रहा। इस आयोजन में सीनियर और जूनियर विद्यार्थियों के बीच आत्मीयता बढ़ाने हेतु विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों, मनोरंजक खेलों और संवाद सत्रों का आयोजन किया गया। पूरे कार्यक्रम में हर्ष और उत्साह का माहौल बना रहा, जिससे न केवल नए विद्यार्थियों का स्वागत हुआ बल्कि विभागीय एकता और सौहार्द को भी प्रोत्साहन मिला। इस आयोजन ने छात्रों को आपसी सहयोग और मित्रता के महत्व को समझने का अवसर प्रदान किया, जिससे उनका विश्वविद्यालय जीवन और अधिक आनंददायक और प्रेरणादायक बनेगा।

विभागाध्यक्ष प्रो. प्रणवीर सिंह ने "Give Respect, Take Respect" संदेश देते हुए अनुशासन और आपसी सम्मान पर जोर दिया। एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. प्रीति बाजपेयी, सहायक प्रोफेसर डॉ. श्याम बाबू प्रसाद, डॉ. कुंदन किशोर रजक, डॉ. बुद्धि प्रकाश जैन एवं अतिथि व्याख्याता डॉ. एम.डी. अशरफ अयूब ने नवागत विद्यार्थियों का स्वागत कर आयोजकों की सराहना की और प्रेरणादायक संदेश दिए।

मिस्टर और मिस फ्रेशर का सम्मान

फ्रेशर बैच के एमडी. साकिब को "मिस्टर फ्रेशर" और दिप्तिमयी नायक को "मिस फ्रेशर" का खिताब मिला। सभी फ्रेशर्स ने अपनी अद्भुत प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को यादगार बना दिया।

निर्णायक मंडल की भूमिका

मिस्टर फ्रेशर साकिब और मिस फ्रेशर दिप्तिमयी नायक

सम्माननीय पीएच.डी. शोधार्थियों ने निर्णायक मंडल के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और जूनियर्स को प्रोत्साहित किया।

आयोजन समिति और फ्रेशर बैच का योगदान

एम.एससी. जूलॉजी सत्र 2023-25 के छात्रों ने उत्कृष्ट आयोजन कर विभागीय एकता का परिचय दिया, जबकि सत्र 2024-26 के विद्यार्थियों ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिए।

मां सरस्वती की प्रतिमा विसर्जन के साथ सरस्वती पूजा शांतिपूर्ण संपन्न

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में विद्या की अधिष्ठात्री देवी मां सरस्वती की पूजा पूरे वैदिक विधि विधान के साथ की गई। विश्वविद्यालय के दीन दयाल उपाध्याय परिसर में माता सरस्वती की प्रतिमा की स्थापना विद्यार्थियों द्वारा की गई। छात्र-छात्राओं में पूजा को लेकर ख़ासा उत्साह देखने को मिला। स्नान-ध्यान के बाद विधि-विधान से विद्या की देवी मां सरस्वती की पूजा-अर्चना श्रद्धा व भक्तिभाव के बीच सम्पन्न हुई। छात्रों ने मां की आराधना कर विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों के लिए

उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की।

तत्पश्चात मंगलवार को पूरे विधि विधान के साथ शहर के मोतीझील में मां सरस्वती की प्रतिमा का विसर्जन किया गया। इस दौरान प्रशासनिक विधि व्यवस्था बनाए रखने के लिए केंद्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग के सहायक प्राध्यापक सह प्रॉक्टोरियल बोर्ड के सदस्य डॉ. सुनील दीपक घोडके, प्रबंधन विज्ञान विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. कमलेश कुमार, नगर थानाध्यक्ष विजय कुमार, सब इंस्पेक्टर दिनकर कुमार, जवान एस के चौधरी महिला सिपाही सुनीता कुमारी, होमगार्ड के जवान दीनानाथ प्रसाद यादव, शोधार्थी राजीव कुमार चौबे, शोधार्थी बृजनंदन पासवान, शोधार्थी आकाश कुमार, अर्पित कुमार श्रीवास्तव, लक्की, तुषाल, रितेश, उत्तम आदि सहित सैकड़ों छात्र उपस्थित थें।

नवप्रवेशित शोधार्थियों हेतु सत्रारंभ कार्यक्रम का आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के मानविकी एवं भाषा संकाय द्वारा नवप्रवेशित शोधार्थियों हेतु सत्रारंभ कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया।

अध्यक्षता करते हुए प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा कि शोध में मौलिकता के साथ अपने कार्य के प्रति ईमानदार होना शोधार्थियों के लिए परम आवश्यक है। मैं आप सभी शोधार्थियों को यह बताना चाहता हूं कि व्यक्ति का लक्ष्य केवल उपाधि पाना ही नहीं होना चाहिए ,शोध में नवीनता भी बहुत आवश्यक है। इसी क्रम में मानविकी संकाय के सभी विभागाध्यक्षों ने भी अपने विचार शोधार्थियों के समक्ष रखे। हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने शोध के सामाजिक परिप्रेक्ष्य की अवधारणा को शोधार्थियों के समक्ष रखा। संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, डॉ. श्याम कुमार झा ने शोध में नैतिकता आचार - विचार को लेकर अपने विचार रखें। अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डॉ. बिमलेश कुमार सिंह ने कहा कि शोधार्थियों में भ्रम की स्थिति नहीं होनी चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित समाजशास्त्र विभाग की सहायक प्राध्यापिका डॉ. श्वेता ने कुलानुशासक समिति से संबंधित तथा जेंडर संवेदना /जागरूकता के साथ - साथ एंटी रैगिंग से संबंधित विचारों से शोधार्थियों को अवगत कराया ।कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. उमेश पात्रा ने किया। कार्यक्रम में मानविकी एवं भाषा संकाय के सभी प्राध्यापक और प्राध्यापिकाएं उपस्थित थी। हिंदी विभाग के डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा , डॉ. श्यामनंदन , डॉ. आशा मीणा और संस्कृत विभाग के डॉ. बबलू पाल, डॉ. विश्वजीत वर्मन तथा अंग्रेजी विभाग के डॉ. दीपक , डॉ. चंदोवा बालेंदु नर्सिंग, डॉ. कल्याणी हाजिरी के साथ - साथ नवप्रवेशित शोधार्थियं उपस्थित रहे। कार्यक्रम को अंतिम स्वरूप देते हुए हिंदी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. गरिमा तिवारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान का हुआ आयोजन

सेहत केन्द्र, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय द्वारा विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर एक विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संरक्षक के रूप में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो संजय श्रीवास्तव का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में डॉ बुद्धि प्रकाश जैन (सहायक आचार्य, जन्तु विज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी) ने विश्व कैंसर दिवस के उद्देश्यों और आवश्यकताओं पर अपना गहन चिंतन प्रस्तुत किया। डॉ जैन ने अपने उद्बोधन में कैंसर के विभिन्न प्रकारों और उसके उपायों पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने महिलाओं में निरन्तर बढ़ रहे ब्रेस्ट कैंसर की समस्या से अवगत कराया। इसके अतिरिक्त उन्होंने लेग,ट्यूमर और लिवर कैंसर की समस्याओं तथा उसकी जागरूकता पर विस्तृत प्रकाश डाला। विशिष्ट वक्ता के रूप में डॉ श्याम बाबू प्रसाद (सहायक आचार्य, जन्तु विज्ञान विभाग, महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी) ने कैंसर के वैश्विक स्तर पर पड़ रहे प्रभावों पर अपना गम्भीर चिन्तन प्रस्तुत किया। डॉ प्रसाद ने अपने उद्बोधन में बताया कि कैंसर जैसी लाइलाज बीमारी से बचने का सबसे प्राथमिक उपाय है जागरुकता। उन्होंने अपने वक्तव्य में भारत और विश्व के सन्दर्भ में निरन्तर हो रही कैंसर की वृद्धि का आँकड़ा प्रस्तुत किया। डॉ प्रसाद ने बताया कि कैंसर में हो रही निरन्तर वृद्धि का कारण जागरुकता का अभाव है। अधिकांश लोग अंतिम स्टेज में पहुंचने

के बाद ही उस पर ध्यान देते हैं जब स्थिति नियन्त्रण के बाहर हो जाती है। अतः समय रहते इसे पहचान करने की आवश्यकता है और साथ ही कुछ आयुर्वेदिक औषधियों के सेवन करने की भी उन्होंने सलाह दी। हरी सब्जियों को अपने भोजन में शामिल करने के लिए भी उन्होंने प्रेरित किया। उक्त कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शोधार्थियों तथा छात्रों ने प्रतिभाग ग्रहण किया। छात्रों ने न केवल श्रोता के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज की अपितु अनेक गम्भीर प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा को भी अभिव्यक्त किया। कार्यक्रम में विभिन्न विभागों के शिक्षकगण उपस्थित रहे। उक्त कार्यक्रम का संचालन सेहत केन्द्र के समन्वयक डॉ बबलू पाल ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग की शोध छात्रा पापिया गड़ाई ने किया।

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय में महिला सुरक्षा सम्बंधित व्याख्यान का आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय (एमजीसीयू) अपने विद्यार्थियों और कर्मचारियों के लिए एक सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण प्रदान करने के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय महिला सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए यौन उत्पीड़न के प्रति जीरो टॉलरेंस नीति अपनाता है।

इसी क्रम में एक जागरूकता व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें नवप्रवेशित छात्राओं को उनके अधिकारों और कानूनी संरक्षण की जानकारी दी गई। इस अवसर पर प्रबंधन अध्ययन विभाग की अध्यक्ष एवं जीएससी की अध्यक्षा डॉ. सपना सुगंधा ने "कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न और लैंगिक संवेदीकरण का महत्व" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्राओं को भारत में महिलाओं के लिए उपलब्ध विभिन्न कानूनी सुरक्षा उपायों से अवगत कराया और उन्हें आत्मनिर्भर व सशक्त बनने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने वास्तविक घटनाओं के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए समझाया कि किसी भी स्थिति की गंभीरता की परवाह किए बिना हर महिला को अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए एवं किसी भी अनुचित घटना की रिपोर्ट अवश्य करनी चाहिए। उन्होंने छात्राओं से अपील की कि वे न केवल स्वयं सतर्क रहें बल्कि यदि उनके आसपास किसी के साथ कोई अनुचित घटना घटित होती है तो उसकी भी जानकारी संबंधित प्राधिकरण को दें। इस कार्यक्रम का शुभारंभ आईसीसी की पीठासीन अधिकारी प्रो. शहाना मजूमदार के स्वागत संबोधन से हुआ, जिसमें उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर को एक सुरक्षित एवं समावेशी स्थान बनाने के महत्व पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में जूलॉजी विभाग की संकाय सदस्य एवं आईसीसी सदस्य डॉ. प्रीति बाजपेयी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। उन्होंने विश्वविद्यालय की प्रतिबद्धता को दोहराते हुए आशा व्यक्त की कि भविष्य में महिलाएं भयमुक्त और समानता से परिपूर्ण समाज में जीवन यापन करेंगी।

18वीं सदी तक विदेशियों के लिए भारत था आकर्षण का केंद्र : प्रो. सिंह

मीडिया अध्ययन विभाग में 'प्राचीन संचार एवं परंपरा' विषयक विशेष व्याख्यान का आयोजन

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग में 'प्राचीन संचार एवं परंपरा' विषयक विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। व्याख्यान का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्राचीन भारतीय संचार प्रणाली के महत्व और उसकी विकास यात्रा से परिचित कराना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा के स्वागत भाषण से हुआ। उन्होंने 'जैक ऑफ ऑल' की अवधारणा के माध्यम से प्राचीन भारत में संचार के विविध साधनों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कैसे प्राचीन काल में मौखिक परंपरा, संकेत भाषा, चित्रलिपि, पत्र, दूत व्यवस्था और ताम्रपत्र जैसे माध्यमों का उपयोग किया जाता था। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि किसी भी समाज की प्रगति उसके संचार प्रणाली की प्रभावशीलता पर निर्भर करती है। सूचना और ज्ञान का प्रसार जितना प्रभावी होगा, समाज उतनी ही तेजी से आगे बढ़ेगा।

मुख्य वक्ता प्रो. सी.पी. सिंह ने कहा कि 18वीं सदी तक भारत दुनिया में सबसे आगे था, और दुनिया के कई हिस्सों से लोग भारत आना चाहते थे क्योंकि भारत ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में बहुत विकसित था। उनका कहना था कि यह इतिहास भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और संचार के प्रभावशाली साधनों का गवाह है।

इसके अलावा संचार की अवधारणा को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि संचार केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सेतु है, जो समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ता है। उन्होंने "सहृदयता और साधारणीकरण" की महत्ता पर बल दिया और कहा कि जब हम संवाद में सहृदयता का समावेश करते हैं, तो हम सामने वाले की भावनाओं को समझते हैं और उनसे गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं।

उन्होंने सरल भाषा में समझाते हुए कहा कि

व्याख्यान में मुख्य वक्ता प्रो. सी.पी. सिंह का स्वागत करते विभागाध्यक्ष एवं अन्य प्राध्यापक

साधारणीकरण का अर्थ यह है कि किसी भी संदेश को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाए कि वह अधिक से अधिक लोगों के लिए स्पष्ट और सुगम हो। एक कुशल संचारक वह होता है, जो जटिल विषयों को भी सहज और बोधगम्य तरीके से प्रस्तुत कर सके। प्रो. सिंह ने संचार के ऐतिहासिक विकास पर चर्चा करते हुए कहा कि भारत में संचार की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है। वेदों और पुराणों की मौखिक परंपरा से लेकर ताम्रपत्र, शिलालेख, हस्तलिखित ग्रंथों और पत्राचार प्रणाली तक, भारत ने विभिन्न संचार माध्यमों को अपनाया है। उन्होंने बताया कि प्राचीन काल में राजा-महाराजाओं के दूत महत्वपूर्ण संदेशों का आदान-प्रदान किया करते थे। ताम्रपत्रों और शिलालेखों के माध्यम से नीतियों और घोषणाओं का संचार किया जाता था। गुरुकुल प्रणाली में मौखिक शिक्षा का विशेष महत्व था, जिसमें शिक्षक अपने शिष्यों को कंठस्थ कराकर ज्ञान का प्रसार करते थे। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक डिजिटल क्रांति ने संचार की प्रक्रिया को और अधिक तेज, प्रभावी और व्यापक बना दिया है, लेकिन इसकी जड़ें हमारी प्राचीन परंपराओं में ही निहित हैं।

व्याख्यान के संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि किसी भी विषय को गहराई से समझने के लिए सुनने की कला आवश्यक है। उन्होंने कहा, ज्ञान अर्जन के लिए हमें मुख्य वक्ता के अनुभवों और अध्ययन को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, क्योंकि वे अपने शोध और अनुभवों के माध्यम से हमें नई सोच प्रदान करते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को सीखने और जिज्ञासु बने रहने की सलाह दी। उनका कहना था कि केवल पढ़ाई तक सीमित रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यावहारिक ज्ञान और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझना भी जरूरी है।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। उन्होंने शब्दों की गरिमा और प्रभावशीलता पर अपने विचार साझा करते हुए कहा कि शब्द केवल संवाद का माध्यम नहीं हैं, बल्कि समाज में सद्भाव, प्रेरणा और सकारात्मकता लाने का सशक्त साधन भी हैं।

उन्होंने कहा कि किसी भी संवाद में भाषा की शुद्धता, सम्मान और मर्यादा बनाए रखना आवश्यक है, क्योंकि शब्दों का प्रभाव स्थायी होता है। उन्होंने विद्यार्थियों को सुझाव दिया कि वे अपने शब्दों के चयन में सावधानी बरतें और प्रभावी संचार के महत्व को समझें। विशेष व्याख्यान में मीडिया अध्ययन विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति थी।

वैश्विक शांति के अद्वितीय वाहक हैं गाँधी: प्रो प्रद्युम्न सिंह

महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि के अवसर पर महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के गाँधी व शांति अध्ययन विभाग में कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस एक दिवसीय कार्यशाला में मुख्य वक्ता बीएचयू के प्रो प्रद्युम्न शाह सिंह थे। उन्होंने अहिंसक संचार के गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गाँधी ने एकेश्वरवाद, वसुधैव-कुटुंबकम, सर्वोदय,पंचयम, पंचशील का व्यवहारिक स्वरूप प्रदान करके न सिर्फ अपने महात्मा उपनाम को सार्थक बनाया बल्कि जैन,बौद्ध,सनातन कर्म मीमांसा की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए विश्व को सत्य व अहिंसा के वास्तविक स्वरूप का दर्शन भी कराया, साथ ही उन्होंने गाँधी के राम एवं कबीर से समानता की चर्चा करते हुए गाँधी के जीवन को चार सोपान में पृथक करके विस्तृत चर्चा की।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रो. प्रद्युम्न सिंह (बाएं) का स्वागत करते विभाग के प्राध्यापक

विशिष्ठ व्याख्यान से पहले डॉ असलम ख़ान ने वैश्विक राजनीति में व्याप्त हिंसा का समाधान गांधीय परिप्रेक्ष्य में किए जाने की वकालत की। विषय स्थापना करते हुए डॉ अम्बिकेश त्रिपाठी ने गांधीजी के अहिंसक आंदोलनों को उनके अहिंसक संचार का माध्यम बताया। इस अवसर पर डॉ नरेंद्र आर्य, डॉ कैलाश प्रधान, डॉ नरेंद्र सिंह, डॉ पंकज सिंह, डॉ ओम प्रकाश, डॉ संजय एवं अन्य प्राध्यापक और विभाग के शोधार्थी और छात्र छात्राएँ उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ अभय विक्रम सिंह ने किया। डॉ जुगल किशोर दधीच ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डॉ अम्बिकेश त्रिपाठी कार्यक्रम के समन्वयक रहे।

'प्रसाद साहित्य के विविध आयाम' विषयक संगोष्ठी का हुआ आयोजन

हिन्दी साहित्य सभा द्वारा 'प्रसाद साहित्य के विविध आयाम' विषय पर जयशंकर प्रसाद की 136 वीं जयंती पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने की।

सर्वप्रथम मंचासीन महानुभावों का स्वागत किया गया। 'प्रसाद साहित्य के विविध आयाम' विषय पर प्रकाश डालते हुए डॉ० अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि संपूर्ण भारतीयता की अवधारणा प्रसाद साहित्य के केंद्र में है।जयशंकर प्रसाद के साहित्य का उद्देश्य भविष्य को दृष्टि देना है। प्रसाद भारतीय संस्कृति को प्रसारित करने वाले रचनाकार हैं। जयशंकर प्रसाद अपने साहित्य के माध्यम से इतिहास गढ़ते हैं और इतिहास के बीच के

संगोष्ठी में उपस्थित प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

अन्तराल एवं अवरोध को भी भरते हैं। हिन्दी साहित्य सभा की अध्यक्ष सुनंदा गुराई ने स्वागत वक्तव्य में कहा 'जयशंकर प्रसाद का रचना संसार भारतीय साहित्य का गौरव है उनकी कालजयी रचनाएं हमें भारतीय संस्कृति, इतिहास और मानवीय संवेदनाओं से गहराई से परिचित कराती हैं।' कार्यक्रम में डॉ. आशा मीणा, सहायक आचार्य हिंदी विभाग एवं हिंदी विभाग के शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहें। कार्यक्रम का सफल संचालन कुलदीप कुमार एम. ए. द्वितीय वर्ष, धन्यवाद ज्ञापन विकास कुमार शोधार्थी हिंदी विभाग तथा रिपोर्ट लेखन अस्मिता पटेल शोधार्थी हिंदी विभाग ने किया।

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

'पत्रकारिता में बदलते रुझान और वर्तमान परिदृश्य' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता का स्वागत करते विभागाध्यक्ष एवं विभाग के प्राध्यापक

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा बुधवार को 'पत्रकारिता में बदलते रुझान और वर्तमान परिदृश्य – स्वरूप: टीवी न्यूज पैकेजिंग' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी डीडीयू परिसर के कॉन्फ्रेंस हॉल में संपन्न हुई, जिसके संरक्षक कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव थे। मुख्य वक्ता श्री शैलेंद्र कुमार, कार्यकारी संपादक, न्यूज कॉरिडोर, नई दिल्ली थे। अध्यक्षता मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने की, जबकि संचालन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सुनील दीपक घोडके ने किया।

अध्यक्षीय और स्वागत भाषण में डॉ. अंजनी कुमार झा ने पत्रकारिता में आ रहे बदलावों और अखबार से टेलीविजन तक की यात्रा पर प्रकाश डाला। उन्होंने चर्चा की कि किस प्रकार टेलीविजन में वेतन और अवसरों को लेकर नए रुझान देखने को मिल रहे हैं। आज के दौर में डिजिटल मीडिया की प्रासंगिकता की चर्चा करते हुए उन्होंने इसे सूचना की गतिशीलता और सूचना प्राप्ति के नए अवसरों के रूप में बताया।

मुख्य वक्ता शैलेन्द्र कुमार ने संबोधन में मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बताते हुए टीम वर्क की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकारिता का नया स्वरूप है और टीआरपी के दबाव के कारण इसमें कई बदलाव हुए हैं। उन्होंने अखबार से टेलीविजन, टेलीविजन से डिजिटल मीडिया और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) यथा चैटजीपीटी जैसे नए ट्रेंड्स पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने पीटीसी (पीस टू कैमरा) के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह दर्शकों में भरोसा बढ़ाने का एक प्रभावी माध्यम है, क्योंकि इससे यह स्पष्ट होता है कि रिपोर्टर ग्राउंड ज़ीरो से काम कर रहा है।

डिजिटल मीडिया के भविष्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने गूगल के एल्गोरिदम और सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन (एसईओ) की महत्ता पर जोर दिया। साथ ही, उन्होंने कहा कि पत्रकारों को तकनीकी ज्ञान के साथ तालमेल बैठाना आवश्यक है, लेकिन तथ्यों से समझौता नहीं करना चाहिए। इसके अलावा, उन्होंने एआई के युवा पीढ़ी पर पड़ने वाले प्रभाव पर भी चर्चा की। डिजिटल मीडिया के विभिन्न आयामों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि यह आज सूचना, विचार और मनोरंजन की गतिशीलता का पर्याय है। अमेरिका के सुपर पॉवर होने का जिक्र करते हुए कहा कि जो देश सूचना के मामले में जितना ही अधिक समृद्ध हैं वह उतना ही अधिक विकसित है। डेटा भंडारण के मामले में भी यह बात लागू होती है। डिजिटल मीडिया के सूचना, शिक्षा और मनोरंजन के विभिन्न प्लेटफॉर्म की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा की संचार के बदलते परिदृश्य में इनकी काफी बड़ी भूमिका है।

कार्यक्रम के संचालक डॉ. सुनील दीपक घोडके ने कहा कि मीडिया के बदलते परिदृश्य में तकनीकी और प्रोफेशनलिज्म की बड़ी भूमिका है। उन्होंने विद्यार्थियों को आधुनिक मीडिया के अनुरूप तैयार होने पर बल दिया।

कार्यक्रम के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें छात्रा रुचि कुमारी, मुस्कान सिंह, अदिति कुमारी, छात्र प्रतीक कुमार और जय गुप्ता ने अपने सवाल पूछे। प्रश्नोत्तर सत्र का संचालन बीजेएमसी चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा सलोनी कुमारी ने की। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसे डॉ. मयंक भारद्वाज ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संगोष्ठी के आयोजन समिति के सदस्य डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, डॉ. साकेत रमण और डॉ. उमा यादव उपस्थित थे।

"दिव्यांगता पर अध्ययन" विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित

एमजीसीयू के दिव्यांगजन प्रकोष्ठ (PwD) द्वारा अंग्रेज़ी विभाग के सहयोग से दिव्यांगता पर अध्ययन विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 27 फरवरी 2025 (गुरुवार) को होटल रुद्र रीजेंसी, मोतिहारी, बिहार में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में कुलपति का स्वागत करते कुलानुशासक एवं अन्य पदाधिकारी

इस सम्मेलन का उद्देश्य दिव्यांगता से संबंधित उभरते विमर्श को उजागर करना था, जिसमें विशेषज्ञों ने इस विषय के विभिन्न पहलुओं पर मूल्यवान विचार साझा किए। माननीय कुलपति, जो इस आयोजन के मुख्य संरक्षक थे, ने दिव्यांगता के मूलभूत सिद्धांतों पर प्रकाश डाला और भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ की गई "दिव्यांग योजना" पर चर्चा की। इस अवसर पर स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड लैंग्वेजेज़ के डीन, प्रो. प्रसून दत्त सिंह भी मंच पर उपस्थित थे।

दिल्ली विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. उज्जवल जना ने मुख्य भाषण दिया, जिसमें उन्होंने दिव्यांगता की अवधारणा के ऐतिहासिक मूल को समझाया। उन्होंने बताया कि प्राचीन समय में दिव्यांगता को अक्सर अभिशाप या दंड के रूप में देखा जाता था, जिससे समाज में दिव्यांग व्यक्तियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। प्रो. जना के विचारोत्तेजक व्याख्यान ने दिव्यांगता की समझ में सांस्कृतिक और दार्शनिक बदलावों को रेखांकित किया। सम्मेलन ने दिव्यांगता अध्ययन को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने पर जोर दिया, ताकि एक समावेशी, समानता पर आधारित और बाधारहित वातावरण तैयार किया जा सके।

वक्ताओं ने विभिन्न साहित्यिक और काल्पनिक पात्रों पर चर्चा की, जैसे फिल्म "शोले" के ठाकुर और "साजन" के सागर, जिन्हें उनकी दिव्यांगता के कारण हाशिए पर रखा गया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि इन पात्रों को केंद्र में लाकर समाज में जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है।

इस सम्मेलन में कई प्रतिष्ठित शिक्षाविदों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें प्रो. कल्पना पुरोहित (जेएनवी विश्वविद्यालय, जोधपुर), प्रो. स्मृति सिंह (आईआईटी पटना), प्रो. जया कपूर (इलाहाबाद विश्वविद्यालय, ऑनलाइन), प्रो. निबा सिंह (मगध विश्वविद्यालय), डॉ. सुभाष मिश्रा (बीबीएयू, लखनऊ), डॉ. बिमलेश कुमार सिंह (प्रधान, शिक्षा विभाग, एमजीसीयूबी), डॉ. पैथलोथ ओंकार (शिक्षा विभाग, एमजीसीयूबी), डॉ. मुक्ता मणि (पटना विश्वविद्यालय), सुजाता पटेल (आईआईटी पटना), डॉ. उमेश पात्रा, श्री बलांदे चंदोबा नर्सिंग, और डॉ. कल्याणी हाजरी (शिक्षा विभाग, एमजीसीयूबी) शामिल थे।

इस सम्मेलन में 30 से अधिक शोधकर्ताओं ने अपने महत्वपूर्ण शोध प्रस्तुत किए।

"भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक विकास" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के राजनीति विज्ञान विभाग द्वारा भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (ICHR) प्रायोजित "भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक विकास" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी को संबोधित करते एमजीसीयू के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव

इस अवसर पर महत्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने मुख्य अतिथि के रूप में सहभागिता की और अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए।

प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "सांस्कृतिक राष्ट्रवाद भारतीय समाज की आत्मा में निहित एक व्यापक अवधारणा है, जिसका विकास वेदों, उपनिषदों और रामायण-महाभारत के युग से लेकर आधुनिक काल तक निरंतर होता रहा है। भारत की सांस्कृतिक अस्मिता सदैव समावेशी रही है, जिसमें विविधता में एकता की अद्भुत झलक मिलती है।"

उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया कि भारतीय राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक विचारधारा नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत, आध्यात्मिक परंपराओं और दार्शनिक दृष्टिकोण से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी और अन्य विचारकों के संदर्भों का उल्लेख करते हुए बताया कि इन महान विभूतियों ने भारतीय संस्कृति की मौलिकता को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया और इसे आत्मनिर्भरता, स्वाभिमान व राष्ट्र प्रेम से जोड़ा।

प्रो. श्रीवास्तव ने यह भी कहा कि, "वैश्वीकरण के इस दौर में हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित रखते हुए आधुनिकता के साथ तालमेल बैठाने की आवश्यकता है। भारतीय संस्कृति की विशेषता यही रही है कि उसने समय के साथ स्वयं को पुनः परिभाषित किया है और यही इसकी सबसे बड़ी ताकत है।"

उन्होंने भारतीय कला, संगीत, साहित्य और परंपराओं में राष्ट्रवादी चेतना की अभिव्यक्ति के कई उदाहरण प्रस्तुत किए। साथ ही, उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करें और विश्व मंच पर इसकी महत्ता को स्थापित करें। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद केवल अतीत का गौरवगान नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की दिशा भी निर्धारित करता है।

सेन्ट्रल लाइब्रेरी स्थित सीनेट हॉल में आयोजित इस संगोष्ठी में कई प्रतिष्ठित विद्वानों, शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान विशेषज्ञों ने भारतीय संस्कृति, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डी.सी. राय ने भी अपने विचार रखे और कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रवाद न केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा है, बल्कि यह आधुनिक भारत के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

संगोष्ठी के अंत में प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें शोधार्थियों और छात्रों ने अपनी जिज्ञासाओं को विद्वानों के समक्ष रखा।

इस संगोष्ठी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझने और उसकी आधुनिक प्रासंगिकता पर मंथन करने का एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया।

स्व के संघर्ष में संचित ज्ञान से पीछे रह गया भारत-प्रो. वैद्यनाथ मिश्र

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा 'काशी तमिल संगमम् 3.O' (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के अंतर्गत आयोजित "भारतीय संस्कृतिक परम्परा में ऋषि अगस्तय का अवदान" विषयक पर 'एक- दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी' विवि के महात्मा बुद्ध परिसर के आचार्य बृहस्पति सभागार में आयोजित हुई। संगोष्ठी के मुख्य संरक्षक विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव व संरक्षक 'अधिष्ठाता, मानविकी एवं भाषा संकाय' प्रो. प्रसून दत्त सिंह थे। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. गरिमा तिवारी एवं सह- संयोजक डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा, डॉ. श्याम नंदन, डॉ. आशा मीणा ' सभी सहायक आचार्य, हिंदी विभाग' व डॉ. बबलू पाल ' सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग' थे। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. वैधनाथ मिश्र 'पूर्व अध्यक्ष, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा', विशिष्ट अतिथि डॉ. पंकज मिश्र ' सह आचार्य सेंट स्टीफेंस कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली' व श्री शैलेन्द्र जी 'एग्जीक्यूटिव एडिटर, न्यूज कॉरिडोर, दिल्ली' थे। संगोष्ठी की शुरुआत द्वीप प्रज्वलन व मंत्रोंचारण से हुई। मंच संचालन डॉ. बबलू पाल 'सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग' ने किया। अतिथियों का अतिथि सत्कार पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र व विवि का प्रतिक चिन्ह देकर किया गया। स्वागत उत्बोधन व विषय प्रवर्तक प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया।

संगोष्ठी के मंच पर उपस्थित अतिथि एवं विश्वविद्यालय के पदाधिकारी

बतौर मुख्य वक्ता प्रो. वैधनाथ मिश्र ने कहा की, एक भारत, श्रेष्ठ भारत, आत्मनिर्भर, भारत के निर्माण में महर्षि अगस्त्य को जानना अनिवार्य हैं। काशी व तमिल को सिर्फ जोड़ने का ही नहीं बल्कि उतर व दक्षिण को, क्षेत्रीय अलगाव को जोड़ने की एक महान कड़ी है, काशी तमिल संगमम् 3.O। अगस्त्य वह है, जो न चलने वाले पर्वत को झुकाते है, संग्रहित करते है, जो धर्म से विचलित नहीं होते है, वो अगस्तय हैं। शास्त्र, दर्शन, विज्ञान, संस्कृत, कला व तमिल व्याकरण में ऋषि अगस्तय का समग्र योगदान, अविस्मरणीय है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. पंकज मिश्र ने कहा की, ये की नि:संदेह है कि वेदों की रचना, सूक्तों की रचना ऋषि-महर्षियों ने किया है। महर्षि अगस्त्य यह जानते थे कि किस पर प्रयोग करने से क्या फल प्राप्त होगी। जब भारत स्व के लिए संघर्ष करने लग गया तो, संचित ज्ञान पीछे रह गया। अवदान की चर्चा करते हुए कहा कि अगर आप आत्यंतिक उपस्थित रहे तो वह अवदान हैं। भारत की भा को दक्षिण की तरफ ले जाने वाले महर्षि अगस्त्य थे। वे अनुसंधानकर्ता व सत्य के ज्ञान के विद्वान थे।

समसामयिक समय की चर्चा करते हुए कहा कि, अकादमी के जीवन से जब तक राजनीति को दूर नहीं करेंगे, तब तक ऋषियों के ज्ञान को नहीं ले सकते है। महर्षि अगस्त्य ने अपने आप को ज्ञान के रसायन में समर्पित किया और जो क्रिया हुई, प्रतिक्रिया हुई और उसका जो प्रतिफल मिला उसकी संपूर्ण घुलन भारतीय संस्कृति में किया है।

वक्ता श्री शैलेन्द्र जी ने कहा की, ऐसे विषयों पर हमें ध्यान देने की जरूरत हैं। क्योंकि वर्तमान समय में इस पर कोई बात नहीं कर रहा है। ये हमारे संस्कृति का हिस्सा रहा है की यहां हम सह-अस्तित्व व वसुधैव कुटुंबकम कि चर्चा कर रहे है। महर्षि अगस्त्य ने साहित्य, शास्त्र, आयुर्वेद जैसे तमाम क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। भारत को एक सूत्र में पिरोने की बात की है। इनका जीवन सामान्य व मानवतावादी के लिए समर्पित है। इन्होंने दक्षिण भारत में अपने सारी ऊर्जा उरेख दी।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा की, शास्त्र दर्शन, विज्ञान, संस्कृत, कला व तमिल व्याकरण में ऋषि अगस्तय का समग्र योगदान, अविस्मरणीय है। विद्यार्थियों को कहा कि, ऐसे विषयों को लेकर विद्यार्थियों में शुद्ध की जिज्ञासा उत्पन्न होनी चाहिए।

उक्त संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, सहायक प्राध्यापक विभिन्न संकायों के अध्यक्ष और शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद रहे।

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

हमारी मातृभूमि की जो अवधारणा है, वही हमारे मातृभाषा की भी अवधारणा हैं ; प्रो. प्रमोद

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के आचार्य बृहस्पति सभागार में 'मातृभाषा के माध्यम से प्रतिभा और क्षमता का विकास' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी मातृभाषा दिवस के अवसर पर आयोजित की गई थी। मौके पर विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव मुख्य संरक्षक एवं अध्यक्ष थे, तो वही मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठता प्रो. प्रसून दत्त सिंह संरक्षक के तौर पर मौजूद थे। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा एवं सह-संयोजक डॉ. गरिमा तिवारी, डॉ. श्याम नंदन, डॉ. आशा मीणा की सक्रिय सहभागिता थी।

कार्यक्रम में स्मृति चिह्न देकर मुख्य वक्ता प्रो. प्रमोद कुमार सिंह का स्वागत करते हुए कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव

इस दौरान, मातृभाषा के माध्यम से प्रतिभा और क्षमता का विकास' विषयक संगोष्ठी का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुई। मंच संचालन डॉ. उमेश पात्रा ने किया, जबकि स्वागत उद्बोधन मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठता प्रो. प्रसून दत सिंह द्वारा किया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में विवि के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा, महाभारत की अंतर कथा में वर्णित है कि अभिमन्यु जब अपनी मां के गर्भ में थे तब उनके पिता उनको चक्रव्यूह रचना सीखा रहे थे और वो सीख रहे थे। वैसे ही बच्चा भ्रूण में ही मातृभाषा समझने लगता है। 6 से 14 वर्ष को विकासशील उम्र माना जाता है उस उम्र में बच्चों को जो भाषा सीखा दिया जाता है वो भाषा उसके लिए सहज व सरल होता है। उन्होंने कहा कि, हम फ्रांस और अमेरिका चले जाए वहां की भाषा को सीख परन्तु अपनी मातृभाषा को हम भूल नहीं पाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा पर बल दिया गया हैं। दूसरी भाषा को अच्छे से बोलने के लिए हमें अपना ऊर्जा और समय दोनों देना होता हैं, साथ ही हमें व्याकरण भी सीखना पड़ती हैं लेकिन मातृभाषा में व्याकरण का ज्ञान न होने के बावजूद भी अच्छे से हम बोल लेते हैं।

मुख्य वक्ता प्रो. प्रमोद कुमार सिंह 'पूर्व अध्यक्ष हिंदी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर' ने कहा की, 'मातृभाषा के माध्यम से प्रतिभा और क्षमता का विकास' विषय बहुत व्यापक है और मैं अल्पज्ञ हूं की हमारी मातृभूमि की जो अवधारणा है, वही हमारे मातृभाषा की भी अवधारणा हैं। उसका प्रथम चरण राष्ट्रवाद है, जिसका बीज अथर्ववेद में हैं। यह धरती हमारी मां है और हम उनके पुत्र हैं। मातृभाषा की सहानुभूति सबसे पहले हमको अपनी मां से प्राप्त होती हैं। किसी भी राष्ट्र की सर्व उन्नति अपने भाषा में होती है। मातृभाषा हमारी शास्त्रीय और लोक भाषा हैं। मातृभाषा जनता की जीभ पर थिरकती हुई भाषा हैं। उन्होंने कहा जब मातृभाषा में छौक पड़ती है तो, प्रेमचंद्र, दिनकर, टैगोर पैदा होते हैं। मातृभाषा हमारी शक्ति होती है, जिसके सामने हम सभी नतमस्तक हो जाते हैं। व्याकरण विकार उत्पन्न करती हैं, जबकि मातृभाषा सौंदर्य उत्पन्न करती हैं। 'जाओ पिया लाओ सोन मछली, व 'महुआ के नीचे मोती झरे' ये दो गीत गाते हुए कहा की, ऐसे गीत जब आते हैं तो हिंदी भाषा की ताकत बढ़ जाती हैं।

प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने कहा की जो भाषा माँ के दूध के साथ स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाती है, उसे मातृभाषा कहते हैं। बच्चा शुरू से ही अपनी मातृभाषा से ही जुड़ते हुए बड़ा होता है। हम कितना भी भाषा सीखे परन्तु जब हम सोचते हैं तो अपनी मातृभाषा में ही सोचते हैं। जो-जो देश अपने मातृभाषा में कार्य किया है, उनका विकास हुआ है। हमें भी अपने मातृभाषा को लेकर कार्य करने की आवश्यकता है। अंत में विद्यार्थियों से कहा की, हमें अपने मातृभाषा पर गर्व करना चाहिए और हम अपने-अपने घर में मातृभाषा का प्रयोग करें।

बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रणजीत कुमार चौधरी ने कहा, अंग्रेजी भाषा फायदेमंद भी हैं और नुकसानदाई भी हैं। कहीं भी देखें तो अब सामग्री अंग्रेजी में ही मिलती है। जितना अपने दैनिक जीवन में अंग्रेजी भाषा का उपयोग करते हैं उससे ज्यादा हमें अपने मातृभाषा का उपयोग करना चाहिए।

धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के सहायक आचार्य डॉ. श्याम नंदन ने किया। संगोष्ठी में विभिन्न विभाग के शोधार्थी व विद्यार्थी मौजूद थे।

जो शब्द बयां नहीं करते वो फोटो बयां कर जाते है: प्रो. श्रीवास्तव

कार्यशाला में विद्यार्थियों द्वारा खींची गई तस्वीरों को देखते कुलपति एवं अन्य

कार्यशाला में फोटोग्राफी की तकनीक समझाते मुख्य वक्ता प्रशांत रवि

मीडिया अध्ययन विभाग में 'फ़ोटोग्राफी, वीडियोग्राफी व एनिमेशन' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के संरक्षक कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव व कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह मौके पर मौजूद थे। अध्यक्षता मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अंजनी कुमार झा ने की। कार्यशाला के संयोजक डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र 'सहायक आचार्य मीडिया अध्ययन विभाग' थे।

प्रो. संजय श्रीवास्तव ने कहा कि फोटो पत्रकारिता, पत्रकारिता की महत्वपूर्ण विधा है। हमें ऐसी फोटो लेना चाहिए, जिसको लेने के बाद उसके बारे में बहुत कुछ लिखना ना पड़े। फोटो संकेत का काम करती है, जो शब्द बयां नहीं करती वो फोटो बयां कर जाती है। जहां शब्द कम पड़ जाते हैं, वहां फोटो कई चीजें बयां कर जाती हैं। फोटो पत्रकार के पास एक विशेष दृष्टि होती है, जो समय के साथ आती है।

बतौर मुख्य वक्ता प्रशांत रवि 'संकाय, पटना महिला कॉलेज' ने विद्यार्थियों को फोटोग्राफी और कैमरा तकनीक के बुनियादी और उन्नत पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की। वर्कशॉप में कैमरा के महत्वपूर्ण सेटिंग्स जैसे आईएसओ (इमेज सेंसर की संवेदनशीलता), शटर स्पीड (लाइट कैप्चर की गति), अपर्चर और व्हाइट बैलेंस (रंगों की सटीकता) पर गहराई से जानकारी दी गई। उन्होंने ने बताया कि आईएसओ कम होने पर तस्वीरें स्पष्ट आती हैं, जबकि अधिक आईएसओ में नॉइज़ बढ़ जाता है। शटर स्पीड के माध्यम से गतिशील वस्तुओं को कैप्चर करने और ब्लर इफेक्ट के नियंत्रण पर चर्चा की। अपर्चर के उपयोग से बैकग्राउंड ब्लर बनाने और लाइट इनटेक को नियंत्रित करने की तकनीक समझाई। व्हाइट बैलेंस के द्वारा विभिन्न प्रकाश स्रोतों के अनुसार रंग संतुलन बनाए रखने की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला गया। अंत में वीडियोग्राफी और एनीमेशन की बारीकियों पर संक्षिप्त चर्चा की गई, जिसमें फ्रेम रेट, मोशन कैप्चर और एडिटिंग की तकनीकें शामिल थीं। इस वर्कशॉप ने फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को कैमरा ऑपरेशन की व्यावहारिक समझ और नवीन तकनीकों से परिचित कराया।

स्वागत वक्तव्य डॉ अंजनी कुमार झा ने प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज के कार्यशाला से विद्यार्थी कैमरा के तकनीकी पहलुओं को विस्तार से जान पाएंगे। उन्होंने कार्यशाला की प्रासंगिकता को रेखांकित किया।

मंच संचालन डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने किया। मुख्य वक्ता का परिचय प्रीति कुमारी 'बीजेएमसी द्वितीय सेमेस्टर' ने दिया। कार्यशाला में भाषा एवं मानविकी संकाय के अधिष्ठाता एवं कुलानुशासक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, पंडित दीनदयाल उपाध्याय परिसर के निदेशक प्रो. शिरीष मिश्रा, प्रबंधन विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. सपना सुगंधा, वाणिज्य विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. शिवेंद्र सिंह उपस्थित थे। साथ ही कार्यशाला आयोजन समिति के डॉ. साकेत रमण, डॉ. सुनील दीपक घोडके, डॉ. उमा यादव, डॉ. मयंक भरद्वाज व श्री आयुष आनंद मौके पर मौजूद थे। मुख्य वक्ता का स्वागत अंग वस्त्र व मोमेंटो देकर किया गया।

कार्यशाला के बीच विद्यार्थियों द्वारा प्राकृतिक, एनिमल , ट्रैफिक जाम और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बंधित खिंचे फोटो को कुलपति के समक्ष रखा गया। यह कार्यशाला दो- पाली में आयोजित की गयी। जिसके पहले पाली में बीएजेएमसी द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थी मौजूद थे, तो वही द्वितीय पाली में बीजेएमसी षष्ठ , एमजेएमसी द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर के विद्यार्थी मौजूद थे।

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

प्रो. संजय श्रीवास्तव बने विश्वविद्यालय सलाहकार समिति के अध्यक्ष

प्रो. संजय श्रीवास्तव (फाइल फोटो)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव को विश्वविद्यालय सलाहकार समिति के अध्यक्ष के रूप में नामित किया गया है। यह निर्णय बिहार के माननीय राज्यपाल-सह-कुलाधिपति द्वारा लिया गया है, जो राज्य की उच्च शिक्षा व्यवस्था को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रो. श्रीवास्तव को यह दायित्व नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, नालंदा के कुलपति प्रो. के.सी. सिन्हा के कार्यकाल पूर्ण होने के पश्चात सौंपा गया है। विश्वविद्यालय सलाहकार समिति के अध्यक्ष के रूप में प्रो. संजय श्रीवास्तव का यह नामांकन तत्काल प्रभाव से लागू होगा।

प्रो. संजय श्रीवास्तव अपने कुशल नेतृत्व और शैक्षणिक सुधारों के लिए प्रसिद्ध हैं। महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय में कुलपति के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान, उन्होंने शोध, नवाचार और शैक्षणिक उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके मार्गदर्शन में विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान स्थापित की है।

उनकी इस महत्वपूर्ण नियुक्ति से बिहार के उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच बेहतर समन्वय, नीतिगत सुधार और अकादमिक विकास को नई गति मिलने की उम्मीद है।

उनकी नियुक्ति पर शिक्षा जगत के प्रतिष्ठित विद्वानों और महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया है। इस निर्णय से राज्य के विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक व प्रशासनिक विकास को एक नई दिशा मिलेगी।

उक्त जानकारी एमजीसीयूबी के जनसंपर्क प्रकोष्ठ के संयोजक डॉ. श्यामनंदन ने दी। प्रो. श्रीवास्तव के इस मनोनयन को लेकर केविवि के गाँधी परिसर के निदेशक प्रो. प्रसून दत्त सिंह, डीडीयू परिसर के निदेशक प्रो. शिरीष मिश्रा, बुद्ध परिसर के निदेशक प्रो. रणजीत कुमार चौधरी, चाणक्य परिसर के निदेशक प्रो. ए. पाल सहित विभिन्न संकायों के संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, शहर के शिक्षाविदों, समाजसेवियों आदि ने उन्हें बधाई दी है।

"इंडियन कांस्टीट्यूशन @ 7 5 : हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान" विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में "इंडियन कांस्टिट्यूशन @ 7 5 : हमारा संविधान, हमारा स्वाभिमान" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। उद्घाटन समारोह विश्वविद्यालय के बुद्ध परिसर स्थित बृहस्पति सभागार में संपन्न हुआ। संगोष्ठी के दौरान चार तकनीकी सत्रों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देशभर से आए शोधार्थी एवं विद्वान अपने शोध पत्र प्रस्तुत करेंगे।

संगोष्ठी का उद्घाटन दीप प्रज्वलन एवं मंगलाचरण के साथ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव ने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि संविधान केवल एक विधिक दस्तावेज नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिबिंब है। उन्होंने कहा कि संविधान और लोकतंत्र की निरंतरता पर मंथन आवश्यक है, ताकि देश की संवैधानिक परंपराएं सुदृढ़ बनी रहें।

मुख्य अतिथि चौधरी देवी लाल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अजमेर सिंह मलिक ने संविधान की एकरूपता और समरसता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह किसी एक देश के संविधान की नकल नहीं है, बल्कि एक सर्वस्वीकार्य संविधान बनाने हेतु विभिन्न संविधानों के अध्ययन से निर्मित हुआ है।

विशेष वक्ता डॉ. प्रवेश कुमार ने भारतीय परंपरा में संविधान के मूल तत्वों की व्याख्या की, जबकि उद्घाटन सत्र की बीज वक्ता पटना विश्वविद्यालय की डॉ. शेफाली रॉय ने विकसित भारत में संविधान के आचरण और विकास पर अपने विचार रखे। उन्होंने संविधान की सर्वोच्चता को रेखांकित करते हुए कहा कि कोई भी संस्था या व्यक्ति संविधान से बड़ा नहीं है।

कार्यक्रम में सामाजिक विज्ञान संकायाध्यक्ष प्रो. सुनील महावर ने संविधान निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को रेखांकित किया और कहा कि संविधान के कारण ही विविधता में एकता की अवधारणा संभव हो पाई है।

इसके अतिरिक्त, प्रो. मुनेश्वर यादव (ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय), प्रो. इंद्रजीत सिंह सोढ़ी (जामिया विश्वविद्यालय), डॉ. अभिषेक प्रताप सिंह (दिल्ली विश्वविद्यालय) सहित कई प्रतिष्ठित विद्वानों ने संविधान के विभिन्न आयामों पर विस्तृत चर्चा की।

संगोष्ठी के संयोजक डॉ. ओम प्रकाश गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन देते हुए कहा कि यह संगोष्ठी समकालीन समय में संवैधानिक विमर्श की प्रासंगिकता को स्थापित करने का एक सशक्त प्रयास है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

शैक्षिक भ्रमण पर गए प्रबंधन विज्ञान विभाग के विद्यार्थी

शैक्षिक भ्रमण पर रवाना होते विभाग के प्राध्यापक एवं विद्यार्थी

विश्वविद्यालय के प्रबंधन विज्ञान विभाग के 2023-25 सत्र के छात्रों ने 15 फरवरी 2025 को राजगीर में एक दिवसीय शैक्षिक भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने राजगीर के पर्यटन और व्यावसायिक संभावनाओं का गहन अध्ययन किया, जिससे उनकी व्यावहारिक समझ को मजबूती मिली।

इस भ्रमण में छात्रों का मार्गदर्शन डॉ. कमलेश कुमार (सहायक प्रोफेसर) और शोधार्थी सुरभि सुमन ने किया। उन्होंने छात्रों को पर्यटन प्रबंधन, व्यवसायिक रणनीतियों और उद्योग जगत की कार्यप्रणाली से अवगत कराया। छात्रों को पर्यटन उद्योग के विभिन्न पहलुओं, निवेश संभावनाओं और व्यावसायिक अवसरों पर चर्चा करने का भी अवसर मिला।

प्रबंधन विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्षा, डॉ. सपना सुगंधा ने इस शैक्षिक यात्रा को अत्यंत उपयोगी बताते हुए कहा कि " ऐसे अनुभव छात्रों की व्यावसायिक दक्षता को बढ़ाते हैं और उन्हें वास्तविक दुनिया की चुनौतियों के लिए तैयार करते हैं।" उन्होंने माननीय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि "कुलपति महोदय के दूरदर्शी नेतृत्व और सतत मार्गदर्शन से छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो रहे हैं। विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षा और उद्योग के बीच सेतु निर्माण की दिशा में किए जा रहे प्रयासों से छात्रों को व्यापक दृष्टिकोण और व्यावसायिक कौशल विकसित करने में मदद मिल रही है।"

इस शैक्षिक भ्रमण से उत्साहित छात्रों ने इसे ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक अनुभव बताया और विश्वविद्यालय प्रशासन तथा विभाग को इस अवसर के लिए धन्यवाद दिया।

साहित्य

माँ भारती के पुत्र हम

माँ भारती के पुत्र हम, हमारे बल पर देश है।
कभी मिलूंगा खेत में, कभी दिखूंगा प्रदेश में।
हमने जब ठान लिया, हमने देश के लिए जान दिया,
हमने जब जलपान किया, माँ भारती का नाम लिया।
जब हमारे देश पर कट्टरता ने प्रहार किया, धर्म और जाति के नाम पर लोगों को पथभ्रष्ट किया,
तब हमने देश को माँ भारती का मिशाल दिया।
हमार देश की खेतों में, माँ भारती का रक्त पड़ा,
तब किसानों ने माटी उठाया, माटी भी सोना बना।
माँ भारती के कोख में लाखों वीरों ने जन्म लिया,
जो देश की रक्षा के लिये हस्ते हस्ते अपनी जान दिया।
माँ भारती के शीश पर हिमालय राज का मुकुट सजा,
माँ भारती के चरणों में, हिंद महासागर नमन पड़ा।

लेखक :
अपूर्वा त्रिवेदी
छात्रा,
स्नातक षष्टम सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

उठो पार्थ !

तम से भरे इस जीवन में,
इक आस तुम्हे रखना होगा।
कई बार मिली है निराशा तो,
विश्वाश तुम्हे रखना होगा।
अपने संघर्षो से रच दोगे,
ऐसा दृढनिश्चय तुम कर लो।
उठो पार्थ ! तुम जीतोगे
इतिहास तुम्हे रचना होगा।

लेखक :
आदर्श कुमार
छात्र,
परास्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

बिहार की भीषण गर्मी में स्वास्थ्य संकट: जानिए कैसे बचें और क्या करे सरकार

बिहार में हर साल गर्मी का प्रकोप एक गंभीर स्वास्थ्य संकट लेकर आता है। लू, चमकी बुखार (AES), निर्जलीकरण और अन्य गर्मी जनित बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ते देखे जा रहे हैं। गोपालगंज सदर अस्पताल के जिला महामारी विज्ञानी डॉ. रंजीत कुमार सिंह बताते हैं कि उत्तरी बिहार, खासकर मुजफ्फरपुर बेल्ट में गर्मी के कारण 11 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में चमकी बुखार का सबसे अधिक खतरा रहता है। पिछले साल के आँकड़े बताते हैं कि इस क्षेत्र में 500 से अधिक चमकी बुखार के मामले सामने आए थे, जिनमें कई दुर्भाग्यपूर्ण मौतें भी हुई थीं। डॉ. सिंह के अनुसार, इसका मुख्य कारण गर्मी के साथ-साथ लीची में पाए जाने वाले विषाक्त पदार्थ और कुपोषण है, खासकर उन बच्चों में जो खाली पेट रहते हैं।

बिहार सरकार ने इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। स्वास्थ्य विभाग ने सभी जिला अस्पतालों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में विशेष व्यवस्था की है। अस्पतालों में अलग से हीट स्ट्रोक वार्ड बनाए गए हैं जहाँ आइस पैक, ठंडे पानी और ओआरएस के पैकेट की व्यवस्था की गई है। चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ को गर्मी से होने वाली बीमारियों के उपचार के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। राज्य सरकार ने 'तीन धमकियाँ' अभियान चलाकर लोगों को जागरूक किया है - बच्चों को रात में भरपेट खाना खिलाएँ, सुबह जल्दी जगाकर उनकी सेहत की जाँच करें, और अगर बेहोशी या चमकी के लक्षण दिखें तो तुरंत अस्पताल ले जाएँ।

गर्मी से बचाव के लिए स्वास्थ्य विभाग ने कई सुझाव दिए हैं। हल्के और सूती कपड़े पहनना, दोपहर की तेज धूप में बाहर न निकलना, ठंडे पेय पदार्थों का सेवन करना और शरीर को हाइड्रेटेड रखना सबसे महत्वपूर्ण उपाय हैं। डॉ. सिंह विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों को सावधानी बरतने की सलाह देते हैं क्योंकि इनमें गर्मी से होने वाली बीमारियों का खतरा अधिक होता है। राज्य सरकार ने गर्मी से संबंधित बीमारियों की दैनिक रिपोर्टिंग को अनिवार्य कर दिया है ताकि समय पर निगरानी और उचित कार्रवाई की जा सके।

अस्पतालों में आवश्यक दवाइयों और उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। गर्मी से प्रभावित मरीजों के लिए विशेष बेड की व्यवस्था की गई है और एम्बुलेंस सेवा को सक्रिय रखा गया है। हेल्पलाइन नंबर 104 और एम्बुलेंस सेवा 102 के जरिए तुरंत मदद उपलब्ध कराई जा रही है। डॉ. सिंह का कहना है कि सही जानकारी और सावधानी से गर्मी के दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। उनका सुझाव है कि गर्मी के मौसम में स्वच्छ पानी पिएँ, ताजा भोजन करें और धूप में निकलने से बचें। अगर कोई स्वास्थ्य समस्या हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। बिहार सरकार और स्वास्थ्य विभाग की ये सभी तैयारियाँ और जनता की सावधानी मिलकर इस गर्मी को सुरक्षित बना सकती है।

लेखक :
मुस्कान कुमारी
छात्रा,
स्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

Contrasting Realities: A Comparative Study of Finland and India's Rankings in the World Happiness Index

The annual World Happiness Report got published on international happiness day, 20th March, by the Wellbeing Research Centre at the University of Oxford, in partnership with Gallup, the UN Sustainable Development Solutions Network and an independent editorial board. It evaluates countries based on six key parameters: GDP per capita, social support, healthy life expectancy, freedom to make life choices, generosity, and perceptions of corruption. The study includes asking people to rate their own lives on a scale of 0-10 - zero being the worst possible life and 10 being the best possible life. Finland retained its position as the happiest country in the world for the eighth consecutive year, while India ranked 118th out of 147 countries. Considering the theme of this year's report, caring is sharing, as an Indian where sharing and caring is embedded as core values of our culture it arouses a curiosity to dive into the reasons behind such lower rank of india while Finland holding the first position.

GDP per capita:
Finland's great economic stability and high level of living are reflected in its anticipated GDP per capita of $53,756 in 2025. India's GDP per capita for the same year, on the other hand, is projected to be $2,937, demonstrating both the country's strong economic growth and the stark differences in income. The disparity highlights how the two countries' levels of economic development and income distribution differ.

Healthy life expectancy:
Finland's healthy life expectancy is projected to reach approximately 72.7 years in 2025, which is indicative of its first-rate healthcare system, emphasis on mental health, and preventive treatment. A 2022 OECD survey found 70% of Finns were satisfied with the country's health care system. On the other hand, India's healthy life expectancy is roughly 60.3 years, underscoring issues like inequalities in access to healthcare, and inadequate infrastructure. There is disparity between access to healthcare in urban and rural areas. There are hospitals on panchayat level but doctor is not available. High-cost medicines is also a concern along with poor management at lower levels of healthcare system.

Social support:
Each year, Finland spends billions of euros on “social protection” programs, which include pensions, health care costs, unemployment and other social services. Finland regularly spends more than 20% of its gross domestic product on such issues, among the highest proportions in the European Union and the Organization for Economic Cooperation and Development. Trust plays a vital role, and in Finland, trust extends beyond personal relationships to public institutions, governance and even strangers. Traditionally, Indian society is supportive. But with increasing urbanisation individualism has become prevalent. The institutions on lower level often discriminates on the basis of social status.

Freedom to make life choices:
Active participation and open dialogue between the public and the authorities foster inclusion and empowerment in Finland. Freedom of expression promotes transparency and a thriving democracy. Societal framework combining stability and safety nets, so individuals can make life choices without fear of failure. Comparatively speaking, India has made strides toward granting individual liberties, particularly in metropolitan areas, but still faces formidable socioeconomic and cultural obstacles. Particularly in rural areas, limitations including poverty, lack of resources, and gender discrimination frequently restrict people's ability to make life decisions. Furthermore, societal expectations and cultural standards can occasionally limit an individual's ability to make their own decisions, particularly for women and underrepresented communities. Fully exercising one's autonomy might also be hampered by institutional obstacles and bureaucratic inefficiency.

Generosity:
India demonstrates higher in generosity mainly because it is rooted in its cultural and religious tradition. Philanthropy is part of lifestyle of Indians. Community-driven initiatives and informal acts of kindness, such as helping neighbours or donating during festivals, are integral to Indian society. On the other hand, Finland also showcases good practice of generosity all international wallet-dropping experiments have shown Finland to be among the best places to lose your wallet but Since inequality of wellbeing is low, there is a correspondingly lower need for private charity.

Perceptions of corruption:
There is 18% perceptions of corruption in Finland while 73% in India. This data is evident enough to support the ranking of both the countries. In Finland A strong sense of shared responsibility promotes a fair and just society, central to happiness. Over 90 percent consider paying taxes an important civic duty. Good governance and a political system that is transparent, accountable and committed to the rule of law. While on the other hand, corruption has been part of the system and a very normal thing. Though, now with digitalisation, corruption has been declined to some extent. People has become more aware and vocal about their rights.

The report shows a comparative result based on few data and sample surveys. It doesn't reflect the core reality of any country due to its methodology being under scrutiny. This statement can be backed by the fact that countries like Pakistan, Palestine, and Ukraine ranks above India. India is a land of happiness where every day is a festival but we are lacking on certain points where work is needed by the government, citizens and society. Not that this report is accurate but it can be used as driving force to make India a better and happier place to be at.

Writer :
Khushi Kumari
Student,
BAJMC 4th semester
Dept. of Media Studies

चंपारण: शिक्षा का नया केंद्र

चंपारण, जिसे "चंपा का अरण्य" कहा जाता है, अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। यह भूमि महात्मा गांधी के 1917 के सत्याग्रह आंदोलन का केंद्र रही है, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। यहां के वीर सपूत राजकुमार शुक्ल और महान कवि गोपाल सिंह नेपाली ने भी अपनी अमिट छाप छोड़ी है। आज चंपारण एक बार फिर शिक्षा के क्षेत्र में अपनी पहचान स्थापित कर रहा है, और इसका श्रेय पूर्वी चंपारण के मोतिहारी स्थित महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय को जाता है।

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय: शैक्षिक उत्कृष्टता का केंद्र

2016 में स्थापित यह विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में एक नई मिसाल कायम कर रहा है। यहां के छात्र नेट-जेआरएफ जैसी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में सफलता प्राप्त कर रहे हैं, और विभिन्न शोध क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। देश-विदेश से छात्र उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए इस विश्वविद्यालय का रुख कर रहे हैं, जिससे यह संस्थान एक प्रमुख शैक्षिक केंद्र के रूप में उभर रहा है।

कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के कुशल नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय अनुसंधान, नवाचार और शैक्षणिक गुणवत्ता के नए आयाम गढ़ रहा है। आधुनिक प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय और डिजिटल संसाधनों से युक्त यह संस्थान छात्रों को विश्वस्तरीय शिक्षा प्रदान कर रहा है।

हाल ही में विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा इस बात से स्पष्ट होती है कि भारत के राष्ट्रपति, बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार और राज्यपाल ने यहां का दौरा किया और इसकी प्रगति की सराहना की। इन उच्चस्तरीय आगमन का श्रेय कुलपति प्रो. संजय श्रीवास्तव के नेतृत्व को जाता है, जिन्होंने विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

यह विश्वविद्यालय न केवल अकादमिक उत्कृष्टता प्रदान कर रहा है, बल्कि छात्रों को उच्च स्तरीय रोजगार अवसर भी उपलब्ध करा रहा है। यहां के विद्यार्थी प्रतिष्ठित बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सरकारी संस्थानों और मीडिया संगठनों में उच्च पदों पर कार्यरत हैं। विशेष रूप से मीडिया अध्ययन विभाग उल्लेखनीय है, जहां सैकड़ों छात्र नामांकन लेकर देश-विदेश के प्रसिद्ध मीडिया हाउस में अपनी पहचान बना रहे हैं।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय जिस तेज़ी से प्रगति कर रहा है, वह दिन दूर नहीं जब यह भारत के शीर्ष विश्वविद्यालयों में शामिल होगा। यहां के छात्र अपने परिश्रम, मेधा और लगन से शिक्षा के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं। निःसंदेह, यह विश्वविद्यालय भविष्य में भारत का सर्वोच्च शैक्षणिक संस्थान बनने की दिशा में अग्रसर रहेगा और शिक्षा के क्षेत्र में चंपारण की गौरवशाली पहचान को और अधिक सशक्त करेगा।

लेखक :
पुरुषोत्तम कुमार
छात्र,
परास्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

अमानत की हिफ़ाज़त

आसमाँ की चादर पर धुआँ-धुआँ अब छाया है,
हवा में ज़हर घुला है दरख़्तों ने भी दम तोड़ दिया है,
कभी जो बाग़-ओ-बहार में रंगीन मंज़र था,
अब वहाँ बेजान पत्तों का वीराना बिखरा है।

खेतों की मिट्टी जो कभी सोना उगाती थी,
आज वो ज़हरीली बन कर ख़ामोशी बरसाती है,
कभी जो दरिया की लहरें दिल को ठंडक देती थीं,
वो अब गंदगी के दरिया में घुलती नज़र आती हैं।

शहरों का ये शोर ये इंसानी बनावट का घमंड,
हर मौसमी सरगम को निगलने पर आमादा है,
चिड़ियों के गीत हवा की गूँज खो चुकी है,
ज़िंदगी के हर रस में अब मिलावट घोल चुकी है।
कहाँ गए वो बादल जो बरखा का पैगाम लाते थे?
कहाँ गई वो हवाएँ जो राहत की ख़ुशबू बिखेरती थीं?
बढ़ती ये इमारतें काटते ये जंगल हैं,
इंसान की हर चाहत में कुदरत का ही मंजर है।

आओ मिल के एक नई शुरुआत करें,
दरख़्त लगाएँ हर सूनी ज़मीं को हयात करें,
फूलों को फिर से उनकी ख़ुशबू लौटाएँ,
दरिया-ओ-फ़िज़ा को उनका पाक मिज़ाज दिलाएँ।
हवा फिर से सर्द हो फ़िज़ाएँ फिर से चहकें,
हर परिंदा बेख़ौफ़ अपने आशियाने में महकें,
अगर हम सब मिल कर ये फ़र्ज़ निभाएँ,
तो पर्यावरण को फिर से ज़िंदा कर पाएँ।

चलो, क़दम बढ़ाएँ उस सच्ची मोहब्बत की जानिब,
जो इंसान को उसके वजूद का एहसास कराए,
हमारी हर साँस कुदरत की अमानत है,
आओ इस अमानत की हिफ़ाज़त हम सब मिलकर निभाएं।

लेखक :
अतुल कुमार
छात्र,
परास्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
राजनीति विज्ञान विभाग

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

चैती छठ: आस्था और श्रद्धा का पर्व

चैती छठ, जिसे चैती दाला छठ भी कहा जाता है, हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है, जो सूर्य देव और छठी मैया को समर्पित है। मुख्य रूप से उत्तर भारत के बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और नेपाल के कुछ हिस्सों में मनाया जाने वाला यह पर्व भक्ति, पवित्रता और कृतज्ञता का प्रतीक है। यह पर्व हिंदू पंचांग के चैत्र माह में मनाया जाता है, जो आमतौर पर मार्च या अप्रैल में पड़ता है। यह कार्तिक माह में मनाए जाने वाले प्रमुख छठ पर्व का छोटा रूप माना जाता है, लेकिन श्रद्धा और नियमों में उतना ही महत्वपूर्ण है।

चैती छठ का महत्व :

चैती छठ का मुख्य उद्देश्य सूर्य देव और छठी मैया की पूजा कर धन्यवाद ज्ञापित करना है। सूर्य देव को ऊर्जा, स्वास्थ्य, समृद्धि और जीवन का दाता माना जाता है, जबकि छठी मैया को संतानों की रक्षा और परिवार की सुख-समृद्धि की देवी माना जाता है। इस व्रत को निष्ठा और पूर्ण समर्पण के साथ किया जाता है, जिससे व्रतधारी की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

व्रत की विधि और अनुष्ठान :

चैती छठ का पर्व चार दिनों का होता है और इसे अत्यंत कठिन तपस्या के रूप में माना जाता है। इस व्रत को मुख्य रूप से महिलाएं करती हैं, लेकिन पुरुष भी इसे श्रद्धा के साथ रखते हैं।

1. पहला दिन (नहाय-खाय): व्रत की शुरुआत नहाय-खाय से होती है, जिसमें व्रती पवित्र जल से स्नान कर शुद्धता का पालन करते हैं और केवल शुद्ध भोजन का सेवन करते हैं। कद्दू-भात (लौकी और चावल) का प्रसाद ग्रहण किया जाता है।
2. दूसरा दिन (खरना): इस दिन व्रती पूरे दिन उपवास रखते हैं और सूर्यास्त के बाद गुड़ से बनी खीर, रोटी और फल का प्रसाद ग्रहण करते हैं। इसके बाद से 36 घंटे का निर्जला व्रत शुरू होता है।
3. तीसरा दिन (संध्या अर्घ्य): व्रतधारी डूबते सूर्य को जल, दूध, फल, ठेकुआ और अन्य प्रसाद अर्पित करते हैं। नदी, तालाब या किसी जलाशय के किनारे सामूहिक रूप से यह अर्घ्य दिया जाता है।
4. चौथा दिन (उषा अर्घ्य): व्रत का समापन उगते सूर्य को अर्घ्य देने के साथ होता है। व्रती जल में खड़े होकर सूर्य देव और छठी मैया से प्रार्थना करते हैं और व्रत खोलते हैं। प्रसाद के रूप में ठेकुआ, नारियल, केला और अन्य फल बांटे जाते हैं।

चैती छठ का महत्व और आस्था:

चैती छठ पर्व में कठोर तपस्या और अनुशासन का पालन किया जाता है, जो आत्म-संयम, समर्पण और श्रद्धा का प्रतीक है। यह पर्व व्यक्ति के मन, शरीर और आत्मा को शुद्ध करता है और जीवन में अनुशासन और सादगी के महत्व को उजागर करता है। मान्यता है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से इस व्रत को करता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

उपसंहार :

चैती छठ केवल एक पर्व नहीं, बल्कि जीवन के प्रति आभार व्यक्त करने और प्रकृति की उपासना का सुंदर प्रतीक है। यह पर्व सामाजिक समरसता, एकता और सांस्कृतिक धरोहर का परिचायक है, जो जीवन में आध्यात्मिकता और सकारात्मकता का संचार करता है।

लेखक :
ख़ुशी कुमारी
छात्रा,
स्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

किसी जमाने में

ओ मेरे प्यारे देश!
मैं वो हूँ, जो अब हूँ नहीं
देश में, जमाने में!

मैंने अपनी आन-बान-शान
लगा दी,
भारत को बचाने में।

मैं चढ़ गया हँसते-हँसते
फाँसी पर,
देश का जीवन पाने में!

दुनिया चाहे मुझे कम जाने,
पर मैं हूँ,
देश-दीवाने में !

हुई थी आहत,जब अपने लगे,
"मेरा पाकिस्तान" "मेरा हिंदुस्तान"
बनाने में!

अगर मैं होता,
ना होने देता बटवारा,
न ये होता फसाने में!

मैं वो हूँ, जिसे भूल बैठे हैं,
अपने कही किताबों में!
लेता हूँ जब नाम मैं अपना,
राजगुरु
इस जमाने में;

आते हैं दो और चेहरे याद मुझे,
जो "वसंती चोला" में साथ जिये-
मरे,
किसी जमाने में, किसी जमाने में
,किसी जमाने में ।

लेखक :
राज गुरू
छात्र,
परास्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
राजनीति विज्ञान विभाग

गुमसुम लड़की

तूफ़ानों से लड़ती रही।
अंधेरों में जलती रही।
हर पग पर काँटे बिछाए गए,
फिर भी वो चलती रही।

बचपन से बोझ सहा उसने,
सपनों को तोड़ा गया।
आवाज़ दबाई गई उसकी,
फिर भी न रोका गया।

पढ़ने की चाह में आँसू बहाए,
कितनी बार समझौते किए।
पर हर बार वो उठी, संभली,
अपनी राहें खुद तय किए।

घूंघट की कैद में भी उसने,
सूरज सा उजाला मांगा।
दहेज, शोषण और अन्याय से,
हर पल वो अकेली टकराई।

पर अब वो चुप न बैठेगी,
हर दीवार गिराएगी।
अपने अधिकारों को जानकर,
दुनिया को राह दिखाएगी।
संघर्ष ही उसकी पहचान है,
हर ज़ख्म का गवाह है।
नारी अब बस अबला नहीं,
वो खुद अपनी आवाज़ है।

लेखक :
शामभ्वी
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

Overcoming Bihar's Challenges: Education, Caste, and Development

Bihar, a state known for its rich historical and cultural heritage, continues to lag behind in several developmental parameters. Low literacy rates, deep-rooted casteism, and a lack of industrial growth have hindered its progress. Despite various initiatives, Bihar still struggles with poverty, unemployment, and social inequalities. Understanding these issues and finding effective solutions is essential for transforming Bihar into a developed state.

Education in Bihar remains a major concern. The literacy rate in the state is significantly lower than the national average, and access to higher education is limited. Out of a population of nearly 130 million, only 7% of people have obtained a graduate degree. The situation in technical and professional education is even worse, with only 0.30% of people having an engineering degree and 0.06% having a medical degree.

Several factors contribute to this educational decline. One of the biggest issues is that 32% of people have never attended school. Poverty, lack of resources, and social discrimination have made education a distant dream for many, especially for children from Scheduled Castes, Scheduled Tribes, and Extremely Backward Classes. In many cases, students drop out due to inadequate infrastructure, teacher discrimination, and economic hardships. Among the Musahar and other Dalit communities, education levels are alarmingly low, leaving them economically and socially disadvantaged.

Casteism in Bihar is deeply ingrained and significantly affects access to education and employment. Some communities have made significant educational progress, while others remain severely underprivileged. For example, 29% of the Kayastha community has a graduate degree, whereas among the Musahar caste, this number is just 0.18%.

The disparity extends to government jobs as well. Despite the Paswan caste making up 5.31% of Bihar's population, their representation in government jobs is only 1.44%. Discrimination is also evident in schools, where Dalit and backward-caste students face bias, leading to higher dropout rates. A study found that 26% of Dalit children in Bihar drop out of school, with the rate rising to 37% among the Musahar community. Due to caste-based discrimination, social inequality persists, preventing marginalized communities from accessing equal opportunities.

Apart from issues of education and casteism, Bihar's negative image has also hindered its growth. The state is often associated with poverty, unemployment, and mass migration of laborers. The primary reasons behind this perception are limited industrialization and lack of job opportunities. With minimal employment options available, millions of Bihari workers are forced to migrate to other states in search of work.

Corruption is another major challenge in Bihar's development. Numerous government schemes are launched, but due to poor implementation and lack of transparency, their benefits fail to reach the intended beneficiaries. Additionally, caste-based politics often overshadows real development initiatives, slowing down progress.

Addressing these challenges requires collective efforts from both the government and the people. Improving the quality of education should be a top priority. Government schools need better infrastructure, trained teachers, and targeted financial assistance for children from underprivileged communities. To bridge the skill gap, vocational training programs should be introduced, linking education with employment opportunities.

Ending casteism requires large-scale social awareness campaigns to promote equality and inclusivity. Until every individual in Bihar receives equal opportunities, true development will remain a distant dream. Economic growth must be accelerated through industrialization and investment in businesses. By creating more jobs within the state, migration can be reduced, and Bihar's workforce can contribute to its own economy.

Transparent governance is essential to ensure that government schemes reach the right beneficiaries. Reforms in bureaucracy and accountability mechanisms must be implemented to reduce corruption and improve administrative efficiency. Bihar's development requires a holistic approach, incorporating education, employment, social harmony, and governance reforms.

Writer :
Ankit Kumar
Student,
BAJMC 4th semester
Dept. of Media Studies

अपना क्या ?

खेत
अपना
फसल अपना
फसल की दर अमीरों का।
सड़क से संसद अमीरों का
संसद मे बैठा सांसद अमीरों का
और सांसद की जुबान अमीरों का।
कोट-कचहरी अमीरों का
पुलिस - थाना अमीरों का
जेलर अमीरों का
और जेल की चार दिवारी अपनी।
सरकार अमीरों का
सरकारी दफ्तर के कर्मचारी अमीरों का
गली - मुहल्ले अमीरों का
फिर अपना क्या ?
गाँव ?
शहर ?
देश ?

लेखक :
मनोज कुमार
छात्र,
परास्नातक, चतुर्थ सेमेस्टर
भौतिकी विभाग

The Last Day of University Life

The time has flown, it felt so fast,
Yet here we stand, at the very last.
The halls that echoed laughter bright,
Will fade into memories, soft and light.
From endless nights of books and tea,
To carefree talks beneath the tree.
Exams that made our hearts beat wild,
Now, it seems distant, almost mild.
Professors' words, both stern and wise,
Taught us more than just advice.
Friends who stayed through thick and thin,
Turned our losses into wins.
The farewell tears, the parting sighs,
The silent dreams in hopeful eyes.
A chapter ends, a new one calls,
Yet our hearts stay within these walls.
So here's to moments we'll always keep,
To bonds so strong, to roots so deep.
Though life may take us far and wide,
This place will stay our hearts' true guide.

Writer :
Anurag Kumar Tiwari
Student,
MA 4th Semester
Department of English

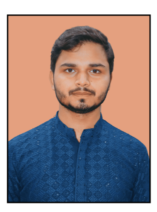

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

आयुर्वेद आधारित स्वस्थ जीवनशैली

स्वस्थ जीवनशैली (Healthy Lifestyle) वह जीवन-पद्धति है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता दी जाती है। यह केवल रोगों से मुक्त रहने तक सीमित नहीं है, अपितु शरीर, मन और आत्मा के सन्तुलन को बनाए रखने की एक सतत प्रक्रिया है। आयुर्वेद, योग, ध्यान, उचित आहार, और नियमित व्यायाम जैसी परम्पराएँ स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देने में सहायक होती हैं।

स्वस्थ के वारे में महर्षि सुश्रुत ने सुश्रुत संहिता में कहा है –

***समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥***
~ सुश्रुत संहिता -1.15.41

स्वस्थ जीवनशैली के प्रमुख तत्व-

1. आहार (Balanced Diet)

सन्तुलित आहार में उचित मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, विटामिन, खनिज और जल होना आवश्यक है। ताजे फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें, दूध उत्पाद, और सूखे मेवे का सेवन लाभकारी होता है। आयुर्वेद में सात्त्विक आहार को सर्वोत्तम माना गया है, जो शरीर को पोषण और मन को शान्ति प्रदान करता है।

2. व्यायाम (Exercise)

नियमित व्यायाम से शरीर में स्फूर्ति और ऊर्जा बनी रहती है। योगासन, प्राणायाम, सूर्य नमस्कार और ध्यान न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि मानसिक शान्ति के लिए भी आवश्यक हैं। पैदल चलना, दौड़ना, तैराकी, और साइकिलिंग भी लाभकारी होते हैं।

3. स्वच्छता (Hygiene)

व्यक्तिगत स्वच्छता, घर और आसपास की सफाई, तथा स्वच्छ जल और पोषक आहार का सेवन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। आयुर्वेद में दिनचर्या (Daily Routine) और ऋतुचर्या (Seasonal Routine) को अपनाने की सलाह दी गई है।

4. नींद (Sleep)

पर्याप्त और गहरी नींद शरीर को पुनर्जीवित करती है। प्रतिदिन 7-8 घण्टे की नींद मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। सोने और जागने का समय नियमित होना चाहिए। आयुर्वेद ब्रह्ममुहुर्त में जगने की सलाह देती है, इससे आयु की वृद्धि होती है।

5. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)

सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास, और सन्तुलित दृष्टिकोण मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करते हैं। ध्यान, योग, और श्वास-प्रश्वास की तकनीकें मानसिक शान्ति प्रदान करती हैं। तनाव प्रबन्धन के लिए रचनात्मक गतिविधियाँ, सङ्गीत, पठन-पाठन, और आत्मचिन्तन सहायक होते हैं।

6. सामाजिक स्वास्थ्य (Social Health)

अच्छे सामाजिक सम्बन्ध, परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। परोपकार, सेवा, और सामुदायिक गतिविधियों में भागीदारी सामाजिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देती है।

आयुर्वेद में स्वस्थ जीवनशैली का महत्व

आयुर्वेद में कहा गया है — “ **स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं च।**” अर्थात्, स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के रोग का निवारण करना आयुर्वेद का मुख्य उद्देश्य है। दोष, धातु और माला के सन्तुलन को बनाए रखना आवश्यक है। सत्व, रज और तम नामक त्रिगुणों का सन्तुलन मानसिक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। आचार रसायन (सदाचार) का पालन करने से जीवन में मानसिक शान्ति और दीर्घायु प्राप्त होती है।

निष्कर्ष -

स्वस्थ जीवनशैली केवल एक आदत नहीं, बल्कि एक समग्र दृष्टिकोण है, जो हमें दीर्घायु, स्वास्थ्य और प्रसन्नता प्रदान करता है। आयुर्वेद, योग, ध्यान, सन्तुलित आहार और सकारात्मक सोच को अपनाकर हम सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त कर सकते हैं। शरीर, मन और आत्मा का साम़ञ्जस्य ही वास्तविक स्वास्थ्य का परिचायक है।

लेखक:
अजय चन्द्र दास
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग

मनुष्य और प्रकृति

जबसे मनुष्य पैदा हुआ है तब से उसे जीवित रहने के लिए प्रकृति पर निर्भर रहना पड़ा है। प्रकृति ने हमें वो सब कुछ दिया है जो जीवित रहने के लिए आवश्यक है (हवा, पानी अनाज, फल, सब्ज़ियां, रोशनी इत्यादि)। इन सबके बिना, मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता।

प्रकृति ने हम सब की आवश्यकता के लिए भरपूर दिया है परन्तु मनुष्य के लालच ने प्रकृति का नाजायज़ दोहन किया है।

पेड़ काटने की वजह से आज हमारे जंगल, वन क्षेत्र और प्राणी लुप्त होने के कगार पर हैं, इसी से प्रकृति का सन्तुलन भी बिगड़ गया है। यह अत्यधिक दोहन का नतीजा है।

औद्योगिक विकास बहुत महत्वपूर्ण है, परन्तु हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि विकास के साथ-साथ हमारी प्राकृतिक धरोहर को भी कोई हानि न हो। आज हवा इतनी प्रदूषित हो गई है कि स्कूलों में पोल्यूशन की वजह से छुट्टियाँ करनी पड़ रही है। अगर हम चाहते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियों को जल संकट, अनाज संकट, वायु गुणवत्ता आदि का सामना न करना पड़े तो प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि प्रकृति की देखभाल के लिए समाज में अपना योगदान दें अथवा कचरा न फैलायें, नदियों को दूषित न करें, और पेड़-पौधे लगाएं जिससे कि हमारा वातावरण साफ-सुथरा हो सके।

अतः हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपनी प्रकृति की देखभाल के लिए चाहे छोटा ही, प्रयास ज़रूर करें। आखिर में हमें जरूर सोचना चाहिए कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों को क्या देकर जा रहे हैं।

लेखक:
नवीन कुमार
शोधार्थी,
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

सुनीता विलियम्स की दूसरी अंतरिक्ष यात्रा: संघर्ष, साहस और सफलता की मिसाल

अंतरिक्ष में जाना हमेशा से मानव के लिए एक सपना रहा है, लेकिन एक महिला के लिए यह सपना पूरा करना किसी जंग जीतने से कम नहीं होता। सुनीता विलियम्स उन चुनिंदा महिलाओं में से हैं, जिन्होंने न केवल अंतरिक्ष में जाने का गौरव हासिल किया, बल्कि वहाँ लंबा समय बिताकर विज्ञान और मानवता की सेवा भी की। उनकी दूसरी अंतरिक्ष यात्रा कई कठिनाइयों से भरी थी, लेकिन उन्होंने अपने साहस और धैर्य से इसे सफल बनाया।

5 जून 2024 को, सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विलमोर ने बोइंग स्टारलाइनर कैप्सूल में सवार होकर अंतरिक्ष की ओर उड़ान भरी। यह मिशन केवल 8 दिनों के लिए निर्धारित था, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। अंतरिक्ष में पहुंचने के बाद, उनके यान के थ्रस्टर में खराबी आ गई और हीलियम लीक होने लगा। यह एक गंभीर समस्या थी, क्योंकि इससे उनके सुरक्षित लौटने की संभावना प्रभावित हो सकती थी। नासा और उनके सहयोगियों ने समस्या को हल करने के लिए समय लिया, और इसी कारण सुनीता और विलमोर को अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर 286 दिन बिताने पड़े।

अंतरिक्ष में रहना कोई आसान काम नहीं है, खासकर तब जब आपकी वापसी अनिश्चित हो। सुनीता के लिए यह न केवल एक शारीरिक चुनौती थी, बल्कि एक मानसिक परीक्षा भी थी। अपनों से दूर रहना, हर दिन एक ही वातावरण में रहना, और लगातार सतर्क रहना—यह सब आसान नहीं था।

सुनीता ने इस दौरान 150 से अधिक वैज्ञानिक प्रयोग किए, जिनमें माइक्रोग्रैविटी में शरीर पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन, पानी पुनर्चक्रण तकनीक और बायोन्यूट्रिएंट्स परियोजना शामिल थी। इसके अलावा, उन्होंने 9 स्पेसवॉक (अंतरिक्ष में चहलकदमी) पूरी कीं, जो किसी भी महिला अंतरिक्ष यात्री के लिए एक रिकॉर्ड था।

आज भी, विज्ञान और अंतरिक्ष क्षेत्र में महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले ज्यादा संघर्ष करना पड़ता है। सुनीता का बचपन साधारण था, लेकिन उनका सपना बड़ा था। उन्होंने अमेरिकी नौसेना में सेवा दी और वहां से नासा तक का सफर तय किया। उनके परिवार और समाज ने उनका समर्थन किया, लेकिन फिर भी, उन्हें हर कदम पर खुद को साबित करना पड़ा।

अंतरिक्ष यात्रा में महिलाओं को कई जैविक और सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है—लंबे मिशनों में मानसिक तनाव, शरीर पर माइक्रोग्रैविटी का अधिक प्रभाव, और तकनीकी क्षेत्रों में पुरुषों के वर्चस्व को तोड़ना। सुनीता ने इन सभी बाधाओं को पार किया और यह साबित किया कि महिलाएँ भी अंतरिक्ष में अपने परचम लहरा सकती हैं।

18 मार्च 2025 को, सुनीता और विलमोर ने स्पेसएक्स क्रू ड्रैगन कैप्सूल में सवार होकर पृथ्वी की ओर वापसी की। जब उनका कैप्सूल पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करने लगा, तो तेज़ झटकों और उच्च तापमान का सामना करना पड़ा। अंततः वे अटलांटिक महासागर में सफलतापूर्वक उतरे।

वापसी के बाद, सुनीता को गुरुत्वाकर्षण से तालमेल बैठाने में कठिनाई हुई। महीनों तक अंतरिक्ष में रहने के कारण उनकी हड्डियों और मांसपेशियों पर प्रभाव पड़ा था। उन्हें संतुलन बनाने में मुश्किल हो रही थी, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और धीरे-धीरे अपनी स्थिति को सामान्य किया।

सुनीता विलियम्स की यह यात्रा सिर्फ एक अंतरिक्ष मिशन नहीं थी, यह एक महिला की इच्छाशक्ति और संघर्ष की कहानी थी। उन्होंने यह साबित किया कि चुनौतियाँ चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, अगर हौसला मजबूत हो तो उन्हें पार किया जा सकता है। उनकी यह यात्रा उन सभी लड़कियों और महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो विज्ञान, अंतरिक्ष या किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहती हैं।

जब वह पृथ्वी पर लौटीं, तो उनकी पहली प्रतिक्रिया थी—

“धरती की मिट्टी की खुशबू सबसे प्यारी होती है।”

यह वाक्य हमें याद दिलाता है कि चाहे हम कितनी भी ऊँचाइयों पर क्यों न पहुँच जाएँ, अंत में हमें अपनी जड़ों से जुड़ने की चाह बनी रहती है। सुनीता विलियम्स की यह यात्रा एक संदेश है कि आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचना संभव है, बस जरूरत है हिम्मत, मेहनत और धैर्य की।

लेखक :
आर्या कुमारी
छात्रा,
स्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

नव भारत का सपना

चलो बनाएँ नव भारत को, सपनों सा संसार,
हर घर में मनाएँ हम, उम्मीदों का त्योहार।
शिक्षा की ये ज्योति जलाकर, मार्गदर्शन का हो निवास,
ज्ञान-विज्ञान की बूँद से, बुझेगी बेकारी की प्यास।
हर खेत लहर आयेगा, हर घर में हो उजाला,
सूखी धरती के कण-कण को, मिले अमृत का प्याला।
मज़दूरों के हाथों में हो, क़ामयाबी की भी लकीर,
किसानों की मुस्कान हो वापस, मिट जाए फ़क़ीर।
तकनीकी सिद्धियों से, बढ़ते रहें क़ामयाबी के क़दम,
हर युवा के मन से ख़त्म हो जाए, हक़ की सितम।
भ्रष्टाचार के अंधकार को, मिलकर करें समाप्त,
सच और न्याय की राह चलें, सुंदर देश हो प्राप्त।
जाति-धर्म का भेद मिटाकर, जोड़ें हृदय के तार,
एकता की माला से पिरोएँ, भारत का परिवार।
चलो बनाएँ नव भारत को, संगठन का आधार,
बनकर सूरज चमकेगा, भारत का आकार।

लेखक :
शीतल कुमारी
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

धर्म शास्त्र और वर्तमान पर्यावरण

धर्मशास्त्रों में प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा को महत्वपूर्ण बताया गया है। वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और भगवद्गीता जैसे धार्मिक ग्रंथों में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण, वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं को देखते हुए धर्मशास्त्रों की शिक्षाएँ और अधिक प्रासंगिक हो जाती हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश को देवता मानकर उनकी रक्षा का संदेश दिया गया है। भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने प्रकृति को ईश्वर की शक्ति बताया है और उसके साथ सामन्जस्य बनाकर जीवन जीने की सीख दी है। रामायण और महाभारत ग्रंथों में पेड़-पौधों और नदियों को पूजनीय बताया गया है। हनुमान जी ने संजीवनी बूटी का उल्लेख किया, जिससे औषधीय पौधों का महत्व सिद्ध होता है। मनुस्मृति में कहा गया है कि प्रकृति का दोहन करने से पाप बढ़ते हैं और प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं।

वर्तमान पर्यावरण और धर्म शास्त्रों का महत्व :

आज के समय में औद्योगिकीकरण, प्लास्टिक प्रदूषण, वनों की कटाई और ग्लोबल वॉर्मिंग जैसी समस्याएँ गंभीर रूप से बढ़ रही हैं। धर्म ग्रंथों में दी गई शिक्षाएँ हमें यह बताती हैं कि हमें प्रकृति के साथ सद्भाव बनाकर चलना चाहिए।

वृक्षारोपण – धर्म ग्रंथों में वृक्ष लगाना पुण्य का कार्य माना गया है।

जल संरक्षण – नदियों और जलस्रोतों की पवित्रता बनाए रखना धर्म का हिस्सा है।

अहिंसा और पर्यावरण प्रेम – जीवों की रक्षा और प्रकृति के प्रति दयाभाव रखना धर्म का मूल तत्व है।

निष्कर्ष-

धर्म शास्त्रों में दिए गए पर्यावरण संरक्षण के सिद्धान्त आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। यदि हम इन शिक्षाओं का पालन करें, तो हम वर्तमान पर्यावरण संकट को कम कर सकते हैं और प्रकृति के साथ सन्तुलन बनाकर जीवन जी सकते हैं।

लेखक:
सत्येन बर्मन
शोधार्थी,
संस्कृत विभाग

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह और महात्मा गाँधी

एक प्रगतिशील समाज ही एक राज्य व राष्ट्र को अनुकुल दिशा की ओर बढ़ाता है। जिस हेतु सर्वप्रथम समाज में कुछ नैतिक व सार्वभौमिक गुण संदर्भित होते है। इस नैतिक गुण के आयाम अलग हो सकते है, परन्तु उनका मूल भूत उद्देश्य एक स्वच्छ व स्वस्थ समाज को परम्परागत जड़ता से दूर करके उसे वैज्ञानिक व तार्किक आधार प्रदान करना है। स्वच्छता मनुष्य जीवन का अभिन्न अंग है। साफ-सफाई का सीधा संबंध हमारे स्वास्थ्य से है, और जीवन जीने के लिए स्वच्छता एक अनिवार्य पहलू भी हैं। महात्मा गांधी ने जिस भारत का सपना देखा था, उसमें सिर्फ राजनीतिक आजादी ही नहीं थी, बल्कि एक स्वच्छ एवं स्वास्थ्य देश की कल्पना भी थी। महात्मा गाँधी के कर्म भूमि चंपारण में गाँधी के द्वारा चलाया गया चंपारण सत्याग्रह, में गाँधी ने निलहों के जुल्म से चंपारण वाशियों को तो बचाया साथ ही उन्होंने लोगों में एक जन जागृति की लहर ला दी। जिसके बाद समाज में तमाम समस्याओं पर लोगों का ध्यान आकृष्ट होने लगा। इस समय सबसे बड़ी समस्या अस्वच्छता थी जो की कई बिमारियों को जन्म दे रही थी। इस हेतु गाँधी ने अपने विचारों से चंपारण वाशियों समेत देश वाशियों को भी जागृत किया, गाँधी के सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह के मुहीम की प्रासंगिकता वर्तमान समय में भी बनी हुई हैं। महात्मा गांधी ने गुलामी की जंजीरों को तोड़कर मां भारती को आजाद कराया। अब हमारा कर्तव्य है कि गंदगी को दूर करके भारत माता की सेवा करें। गांधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास किया, वैसे ही आज हमें स्वच्छाग्रह अपनाकर अपने समाज को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए प्रयास करना चाहिए। यह बापू की विरासत को आगे बढ़ाने का एक तरीका है, जिसमें हम सबकी भागीदारी आवश्यक है।

लेखक:
रवि कुमार
शोधार्थी,
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

Me vs Myself

I am not concerned about
who is performing better than
me because, in reality,
I am not in competition with
anyone else.
The only person I need to
surpass is the person I was
yesterday.
I do not use the clock to
check the time;
I use it to be inspired by its
continuity.
Every day,
I wake up prepared to push
myself further,
challenge my limits,
and become the best version
of myself.
I find an opportunity in every
problem,
and I learn from it for
improvement.
I have changed since last year;
I have grown, improved, and
learned a lot.
I do not allow other people's
success to make me feel
inadequate;
their journeys are theirs, and
mine is mine.
That is what truly matters—it
is me versus myself.

Writer :
Yuvraj Singh
Student,
BAJMC 2nd Semester
Dept. of Media Studies

Scrolling Through Stress: How Social Media Shapes Student Mental Health

It's midnight, and your study notes and class assignments lie abandoned, and you're scrolling Instagram, envying a friend's picture-perfect picnic. Sound familiar? India has over 448 million active users as of 2024, with 65 % of internet users aged 12-29, including a significant student population. Indian students aged 18-24 spend 2.4-3 hours daily on social media, says a 2023 NIMHANS report. Our phones are study tools, social hubs, and stress triggers all in one endless scroll. According to World Journal of Psychiatry 2024,40% students lose sleep to late-night swipes while others find comfort online. Social media has a significant impact on students' mind. Let's dive into the pros and cons of social media.

The downsides hit hard. A 2023 NIMHANS report found that 27 % of Indian teens exhibits signs of social media dependency, linked to increased stress and poor concentration. World Journal of Psychiatry, 2024 carried out a research on 206 adolescents and it showed that excessive social media use (over 3 hours daily) corelates with higher levels of stress, anxiety and depression. 52% of Indian students share personal data online without understanding privacy risks, increasing vulnerability to cyberbullying. According to Forbes India 2023, 67% of Indian teens feel worse about their lives due to comparisons, amplifying Fear of Missing Out (FOMO) and academic stress.

However, it's not all doom. Social media can serve as a lifeline too. A 2023 BMC Psychiatry study says 65% of Indian teens feel connected to peers through it like late-night chats which eases exam stress. During lockdowns, 30% of young users found mental health tips on platforms like Instagram, according to a 2022 Indian Express survey. Virtual study groups on WhatsApp or influencers are now normalizing therapy talks. They encourage students that they do not need tp carry all the stress and anxiety to themselves; they can seek help.

So, we now arrive at a conclusion that Social media is a double-edged sword - stressful yet supportive. Journal of Family Medicine, 2020 conducted a study and found that 1-2 hours of moderate use of social media has a better mental well being. choosing the right influencer is also important. The fake and toxic ones definitely need to be unfollowed. It's not about logging offentirely, but scrolling smarter. So next time you are up at 1 am, swap the screen for your study notes. Your mind needs a break.

Writer :
Kalash Kumari
Student,
M.com 4th Semester
Dept. of commerce

राम क्यूं पूजे जाते है ?

राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि उन्होंने कौशल्या की कोख से जनम लिया। राम इसलिए पूजे जाते है क्योंकि उन्होंने वनवास देने वाली कैकेयी को भी कौशल्या जितना आदर दिया।

राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि जानकी जैसी देवी से विवाह रचाया, राम इसलिए पूजे जाते हैं समाज द्वारा ठुकराई हुई अहिल्या जैसी स्त्री को देवी कह कर बुलाया।

राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि दशरथ जैसे चक्रवर्ती सम्राट उनका पिता है राम इसलिए पूजे जाते है जिसे पुत्र की तरह अपने हाथों से मुखाग्नि देते है वह एक बूढ़े पक्छी जटायू की की चिता थी। राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि उन्होंने सोने की लंका जीत ली राम इसलिए पूजे जाते हैं क्योंकि अपनी अयोध्या के लिए अपनी मातृभूमि के लिए अपनी बाहुबल से जीती हुई सोने की लंका त्याग दी।

राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि उन्होंने रावण की नाभी में तीर भेद दिया। राम इसलिए पूजे जाते है क्योंकि उन्होंने किस प्रकार विद्वान रावण से शिक्षा लेने के लिए लक्ष्मण को उसके चरणों में भेज दिए।

राम इसलिए नहीं पूजे जाते क्योंकि वो भगवान थे राम इसलिए पूजे जाते है क्योंकि वो मर्यादा में रहने वाले इंसान थे।

लेखक :
स्वेता प्रिया
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

नालंदा विश्वविद्यालय: बिहार की गौरवशाली शिक्षा परंपरा

जब दुनिया अंधकार में थी, तब बिहार ज्ञान का दीपक जलाए हुए था। बिहार की मिट्टी ने चाणक्य, आर्यभट्ट और विद्यापति जैसे महान विद्वान दिए, और इसी धरती पर स्थित था। नालंदा विश्वविद्यालय, जो भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली का गौरव था।

5वीं शताब्दी में गुप्त वंश के शासक सम्राट कुमारगुप्त प्रथम द्वारा स्थापित नालंदा विश्वविद्यालय अपने समय का सबसे प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान था। यह दुनिया का पहला आवासीय विश्वविद्यालय था, जहाँ एक समय में 10,000 विद्यार्थी और 2,000 शिक्षक शिक्षा ग्रहण करते थे। यह केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि चीन, जापान, कोरिया, तिब्बत और मध्य एशिया के छात्रों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र था।

नालंदा में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं थी। यहाँ गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, दर्शन, योग, बौद्ध धर्म, तर्कशास्त्र और राजनीति जैसे विषय पढ़ाए जाते थे। छात्रों को कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ता था, जिससे केवल सर्वश्रेष्ठ को ही प्रवेश मिलता था। चीनी यात्रीह्वेनसांग और इत्सिंगने अपने लेखों में नालंदा की भव्यता का विस्तार से वर्णन किया है।

विश्वविद्यालय का पुस्तकालय, जिसे 'धर्मगंज' कहा जाता था, ज्ञान का महासागर था। इसमें लाखों दुर्लभ पांडुलिपियाँ संग्रहीत थीं। इसकी तीन शाखाएँ थीं— रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजक। किंवदंती है कि जब 1193 ईस्वी में बख्तियार खिलजी ने इस पर आक्रमण कर इसे जलाया, तो इसकी आग छह महीने तक जलती रही। इसके साथ ही भारत की एक महान शिक्षा परंपरा का अंत हो गया।

लेकिन बिहार केवल अतीत की कहानियों तक सीमित नहीं है। यह वही राज्य है जिसने सम्राट अशोकजैसा महान नेता दिया, जिसने बौद्ध धर्म का प्रचार पूरी दुनिया में किया। यही वह धरती है जहाँ विक्रमशिला विश्वविद्यालय जैसी शिक्षण संस्थाएँ विकसित हुईं।

आज बिहार को कई लोग पिछड़ा मानते हैं, लेकिन यह वही भूमि है जहाँ से आईआईटी, यूपीएससी, मेडिकल और कानून के क्षेत्र में नए सितारे निकल रहे हैं। नालंदा विश्वविद्यालय के पुनर्निर्माण की पहल की जा रही है, जिससे इसकी खोई हुई गरिमा वापस लौट सके।

नालंदा केवल बिहार का नहीं, बल्कि पूरे भारत का गौरव था और रहेगा। यह प्रमाण है कि शिक्षा और ज्ञान ही किसी भी समाज की असली ताकत होते हैं। बिहार ने एक बार इतिहास बनाया था, और यह फिर से अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करने के मार्ग पर है।

लेखक :
आरुषी कुमारी
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

हाथों से छूटती किताबें...

पिछले दिनों एक आलेख लिखने के दौरान मुझे कुछ किताबों की जरूरत पड़ी। किताबों की दुकानें, लाइब्रेरी आदि का चक्कर लगाते-लगाते बहुत परेशान होने के बाद भी मन लायक कुछ ही किताबें मिल पाई। आज लोगों की जरूरतों और पसंद के लिस्ट से गायब होती किताबें मन को चिंतित करती हैं। स्थिति ये हैं, कि शॉपिंग मॉल, बर्गर, मोमो की दुकानें, कथित आधुनिकता की चासनी से लपेटे संसाधन तो हर जगह मिल जाते हैं। परन्तु एक महत्वपूर्ण किताब की दुकान को ढूंढने के लिए मिलो चलना पड़ता है, सौभाग्य से यदि मिल भी जाए तो उसमें साहित्यिक किताबें मिलना बहुत मुश्किल हैं। किताब पढ़ने की घटती प्रवृत्ति लोगों की समझ और ज्ञान की क्षमता को कुंद कर उन्हें मशीन पर निर्भर बना रहा है। पढ़ने की छूटती आदत, किताबों का लोप होते जाना और डिग्रियों का उपयोग महज़ पैसा कमाने तक सीमित रखना वास्तव में एक बड़ी सामाजिक समस्या हैं। इसके सन्दर्भ में सरकार को कोई ठोस कदम उठाना चाहिए। किताबों को समाज का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता हैं। किसी भी समाज के विकास में किताबों का होना आवश्यक हैं। किताबें एक व्यक्ति के लिए पथप्रदर्शक की भूमिका निभाता हैं। आज किताबों का स्थान उस आभाषी पिटारे ने ले लिया है, जो अपने भीतर दुनिया भर का ज्ञान समेटने का दावा करता हैं। लोगों ने किताबें छोड़कर मोबाइल, कंप्यूटर, आदि का हाथ थाम लिया हैं। घरों में जिस तेजी से आधुनिक संसाधनों का आगमन हो रहा है उसी तेजी से किताबों की अलमारियां गायब होती जा रही हैं। किताब मानसिक, भाषिक और सांस्कृतिक विकास का स्रोत हैं। बच्चों की मासूमियत को बरकरार रखने, उन्हें उनके उम्र के हिसाब से बड़ा करने, उनके समझ और ज्ञान की दुनिया को विस्तृत करने में पुस्तकों का योगदान महत्वपूर्ण है। आवश्यकता इस बात की है कि हर पढ़ा-लिखा वर्ग और पूरा समाज ज्ञान और सकारात्मक मनोरंजन के इस महत्वपूर्ण साधन की अहमियत को समझे, लोगों की जरुरतों की सूची में किताबें शामिल हो। उनका खाली समय इन अनमोल मित्रो के साथ बीते। किताबों का उद्देश्य सिर्फ मनोरंजन करना नहीं होता, उसके मूल उद्देश्य कुरीतियों तथा सभी प्रकार की बुराइयों को हटाकर स्वास्थ्य, सुंदर और आनंदमय जीवन जीने की कला सिखाना और एक बेहतर समाज बनाना होता हैं।

लेखक :
मृणालिनी सहाय
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

बिहार: विकास की राह में चुनौतियाँ और समाधान

बिहार अपनी समृद्ध संस्कृति और गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है, लेकिन वर्तमान में यह कई चुनौतियों से जूझ रहा है। बेरोजगारी, शिक्षा की कमी, और गरीबी जैसे मुद्दे यहां की तरक्की में बाधक बने हुए हैं। इन समस्याओं के कारण बड़ी संख्या में लोग रोजगार और बेहतर जीवन की तलाश में दूसरे राज्यों की ओर पलायन कर रहे हैं।

बेरोजगारी और औद्योगिक पिछड़ापन :
बिहार में बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है। झारखंड के अलग होने के बाद, बिहार में औद्योगिक इकाइयों की भारी कमी हो गई, जिससे रोजगार के अवसर सीमित हो गए। आज भी राज्य की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है, लेकिन आधुनिक तकनीक और संसाधनों की कमी के कारण यह क्षेत्र भी अत्यधिक लाभदायक नहीं बन पाया है। इसके अलावा, राज्य में निवेशकों की रुचि कम होने के कारण बड़े उद्योगों की स्थापना नहीं हो पा रही है, जिससे स्थानीय युवाओं को रोजगार के लिए अन्य राज्यों में जाना पड़ता है।

शिक्षा व्यवस्था में सुधार की आवश्यकता :
अगर बिहार को विकसित करना है, तो सबसे पहले यहां की शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना होगा। सरकारी स्कूलों की हालत सुधारनी होगी और शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देना होगा। आज भी बिहार के कई क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की कमी है, जिससे छात्रों को उचित मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। शिक्षा के अभाव में युवाओं के पास नौकरियों के लिए आवश्यक कौशल नहीं होते, जिससे बेरोजगारी और बढ़ती है।

विकास के लिए आवश्यक कदम :
शिक्षा में सुधार: सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देना और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ाना।
उद्योगों को प्रोत्साहन: निवेशकों को आकर्षित करने के लिए बेहतर बुनियादी ढांचा और सुविधाएं प्रदान करना।
स्वरोजगार को बढ़ावा: युवाओं को स्टार्टअप और उद्यमिता के प्रति प्रेरित करना।
कृषि में आधुनिकरण: किसानों को नई तकनीकों से अवगत कराना और उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान करना।
सरकारी नीतियों का प्रभावी क्रियान्वयन: सरकार को रोजगार सृजन और शिक्षा सुधार से जुड़ी योजनाओं को प्रभावी तरीके से लागू करना होगा।

बिहार के युवा ही इसके विकास की असली ताकत हैं। यदि उन्हें सही दिशा, शिक्षा और अवसर दिए जाएं, तो वे राज्य को आगे ले जा सकते हैं। बिहार का विकास सिर्फ राज्य ही नहीं, बल्कि पूरे देश की प्रगति में योगदान देगा। हमें सरकार के प्रयासों के साथ-साथ व्यक्तिगत और सामूहिक स्तर पर भी योगदान देना होगा, ताकि बिहार को एक विकसित और आत्मनिर्भर राज्य बनाया जा सके।

लेखक :
अंशिका राय
छात्रा,
स्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

स्वच्छ मन

मल - मल धोए तन को, धो न पाए
मन को। चाहे काशी को या उज्जैन
स्वच्छ रख मन को।।
मल-मल धोए पाप को बिना जाने
पाप को।
झूठ बोली, दूसरे से जलन, यही है
पाप-पुण्य का खेल।।
कुंभ और महाकुंभ यह सब है
आस्था-भक्ति का खेल।
गंगा-जमुना जा पर सबसे रख प्रेम।।
भाई -भाई से है द्वेष दूसरे से है प्रेम।
पैसा के इस जगत में पैसा का है
खेल।।
सोने के लंका न टिक पाए, रोक पाए
न रावण की मौत।
एक - दूसरे से रख स्नेह - प्रेम
महाकुंभ का है यही संदेश।।
सब चाहे भगवान को पर पा न पाए
भगवान को।
बिना जाने सब पहचाने पर पहचान
न पाए भगवान को।।
मंदिर में रखे पत्थर को सब पूजे पर
पूज न पाए भगवान को।

लेखक :
आदर्श कुमार ओझा
छात्र,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

सपनों की उड़ान

चलो चलें उस ओर, जहां सूरज की
किरणें चमकती हैं,
जहां आसमान में उम्मीदें नई रेखाएँ
खींचती हैं।
जो भी मुश्किलें रास्ते में आएंगी,
हमारे हौसले को नहीं रोक पाएंगी।
हर बूँद पसीने की मेहनत का जश्न है,
हर चोट सफलता की एक दस्तक है।
अगर हिम्मत हो तो सितारों तक
जाना है,
जो ठोकरें मिलीं, वो बस हमें
आजमाना है।
हार से डरकर रुकना नहीं,
हर गिरावट से उठकर झुकना नहीं।
जीवन एक रणभूमि है, खेल इसे
जीत की धुन में,
तुम्हारा सपना तुम्हारे हाथों की
लकीर है।
चलो अब जागें, नई सुबह का
इंतजार है,
हर एक कदम पर, तुम्हारे साथ
संसार है।
हौसला हो बुलंद और इरादे हो
सच्चे,
तो हर सपना, तुम्हारे कदमों के होगा
नीचे।

लेखक :
जन्मेजय कुमार
छात्र,
परास्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

नारी की महत्ता

सोच बदल ली अब हमने
अबला नहीं, सबला हूँ,
मेरी नई कहानी हूँ।
आँचल में अब भी दूध मगर,
आँखों में तेज़ चिंगारी है।
हम भी पुरुषों से क़दम मिलाकर
चल रहे हैं, चल देंगे
बस चलने दो,
न रोक मुझे, धरती पे आने से पहले
है समाज, जब हूँ मैं,
मेरे बिना नर सुना, नारायण सुना
सुना जग का कोना-कोना!
ये किस्सा पारंपरिक है,
पुरानी है,
नारी के आँचल में अब भी दूध मगर
आँखों में तेज़ चिंगारी है।
इतिहास में लोपामुद्र, घोषा, सती,
तो आज कही संतोष यादव,
लक्ष्मीबाई, सावित्रीबाई, सुनीता
विलियम्स
की नई कहानी हूँ,
आँचल में अब भी दूध मगर
आँखों में तेज़ चिंगारी है!
आओं हम सब शपथ लें,
प्रण करें,
नर-नारी सब एक समान
हमारे देव निर्मित हैं!
दोनों की एक कहानी हैं ।
नारी के आँचल में अब भी दूध मगर
आँखों में तेज़ चिंगारी है!

लेखक :
निशा रंजन
छात्रा,
स्नातक अष्टम सेमेस्टर
बी.टेक. (सीएसई)

न फंस झमेले में...

इन फरेबों के धार में, तू बह न
पायेगा,
अपने जीने की कोई, तू वजह न
पायेगा,
अय दिल न फंस मोहब्बत के झमेले
में,
कभी इसका दिया दर्द, तू सह न
पायेगा,
टूट जायेगा इक दिन तू अपनों के
हाथों,
किसी से अपने अरमां, तू कह न
पायेगा,
कौन है क़ातिल पता न चलता आज
कल,
यूँ ही भरोसे झूठें यक़ीं के, तू रह न
पायेगा
न धड़क तू इतना इन बेवफ़ाओं के
वास्ते,
क्या भरा हैं इनके अंदर, तू तह न
पायेगा,
ये दुनिया बड़ी विचित्र है समझ ले
"अनुराग",
इस ज़माने की फ़ितरतें, तू सह न
पायेगा।।

लेखक :
अनुराग कुमार आनंद
छात्र,
परास्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
हिंदी विभाग

सपने

आसान नहीं सपने,
पर कर दिखलाना है
न कुछ है खोने को,
पर है बहुत कुछ पाने को
फिर क्यूँ किन्तु-परन्तु का बहाना हैं
चाँद तलक दूर जाना हैं।
समुंद्र, कूप सा गहरा,
आसमान सा ऊँचा
ख्वाबों कि फसानें को
हकीकत कर दिखलाना हैं
कड़कती धूप में टपकती पसीने की
एक-एक बूंद मोती सा बनाना हैं
चाँद तलक दूर जाना हैं।
घने अंधकार के सायों में
खुद को चाँद सा चमकाना हैं
क्यों फ़िक्र हैं अंजाम का,
क्या जिक्र करता कर्म का
करता और चलता जा
अनंत मंजिलों को पाना हैं।
चाँद तलक दूर जाना हैं।
जागीर नहीं सफलता किसी दौलत
कि
तकदीर और मेहनत से
भरी हाथों का खिलौना है
चाँद तलक दूर जाना है।।

लेखक :
आशीष कुमार
छात्र,
परास्नातकचतुर्थ सेमेस्टर
जंतु विज्ञान विभाग

एक पुरुष की अभिव्यक्ति

पुरूषों के दुख को किसी ने
नहीं जाना..
न ही पुरूष स्वयं समझ पाए
अपने दुखो का मूल कारण..
वो हमेशा डरे, कभी पिताजी,
कभी बड़े भाई से, कभी लोगों
से कभी समाज से, कभी प्रेम-
प्रेमिका-पत्नि से, व कभी खुद
से ...
उन्होंने कभी निवारण नहीं
किया अपने दुखों का, बल्कि
वो टालते रहे हमेशा उदासी
को ...
खुद को बांध लिया उन्होंने
जिम्मेदारियों में, ताकि वो
दुनिया के सबसे व्यस्ततम
प्राणियों में नजर आए, उनके
हिस्से में उम्मीद की एक
टोकरी भी आई ..
कभी भाई कभी बेटे के रूप
में,, कभी पति कभी पिता के
रूप में,, वो जीवन के आखिरी
क्षणों तक अपने कर्तव्य मूल्यों
का निर्वाह करते रहे...
वो हमेशा लड़ते रहे, सफलता
और असफलता के बीच के
द्वन्द्व युद्धों में ..
उन्हें कभी आभास ही नहीं
हुआ कि उन्हें खुद के लिए भी
जीना है ...
पुरुष सबके हुए, सबके लिए
जिए,, पर न कभी खुद के हो
पाए, न कभी खुद के लिए जी
पाए !!

लेखक :
संजीत कुमार
छात्र,
परास्नातक चतुर्थ सेमेस्टर
हिंदी विभाग

मोतिहारी, बिहार | दिसंबर 2024 + जनवरी-फरवरी 2025 (संयुक्तांक)

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
parisarpratibimb@mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

विनोद कुमार शुक्ल : हिंदी साहित्य के जादुई यथार्थवादी

विनोद कुमार शुक्ला हिंदी साहित्य के एक प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित लेखक हैं। इनका जन्म 1 जनवरी 1937 को भारत के राज्य छत्तीसगढ़ के राजनंदगांव में हुआ। उनकी शिक्षा भी वहीं से हुई और बाद में उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. (हिंदी) की पढ़ाई की।साहित्य में उनकी राह तब खुली जब वे 12वीं कक्षा के छात्र थे और हिंदी की परीक्षा में फेल हो गए। उनका शुरुआती जीवन एक साधारण ग्रामीण परिवेश में बीता, जिसने उनके लेखन को गहराई और मौलिकता प्रदान की। वे अपनी अद्वितीय लेखन शैली, गहरी संवेदनशीलता और सरल भाषा में गूढ़ भावनाओं को व्यक्त करने की कला के लिए जाने जाते हैं। उनका लेखन न केवल सामाजिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसके माध्यम से उन्होंने हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में साहित्य सृजन किया है। उनका पहला कविता संग्रह 1971 में "जय हिन्द" नाम से प्रकाशित हुआ। 1979 में "नौकर की कमीज़ "नाम से उनका उपन्यास आया जिस पर फ़िल्मकार मणिकौल ने इसी के नाम से फिल्म भी बनाई। विनोद कुमार शुक्ला को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों के लिए कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। शुक्ल के दूसरे उपन्यास "दीवार में एक खिड़की"को 1999 साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है।

विनोद कुमार शुक्ल की कुछ और रचनाएं हैं जैसे कि-

खिलेगा तो देखेंगे
महाविद्यालय
सब कुछ होना बचा रहेगा
एक चुप्पी जगह

सूर, तुलसी, जायसी पर की गई आलोचनाएँ, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद, रसमीमांसा आदि विनोद कुमार शुक्ल की आलोचनात्मक रचनाएँ हैं। उनके निबन्ध चिंतामणि नामक ग्रंथ के दो भागों में संग्रहीत हैं।

विनोद कुमार शुक्ल को कई सारे पुरस्कार मिले है जैसे -

गजानन माधव मुक्तिबोध फ़ेलोशिप
राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान
शिखर सम्मान (म. प्र. शासन)
हिन्दी गौरव सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान)
रज़ा पुरस्कार
दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान
रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार

उनके पात्र आम जीवन से आते हैं, जिनका संघर्ष और विचारधारा समाज की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती है। उनकी रचनाएँ न केवल हिंदी साहित्य बल्कि समकालीन भारतीय लेखन में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। वे अपने लेखन के माध्यम से पाठकों को गहराई से सोचने पर मजबूर कर देते हैं और साहित्य की शक्ति को सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं। विनोद कुमार शुक्ल को हिंदी लेखक को शनिवार को भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान 59वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से "आशा और प्रकाश के कथाकार "को सम्मानित किया गया। विनोद कुमार शुक्ल को उनकी "सादगी" और "संवेदनशीलता" के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। यह पुरस्कार जीतने वाले 12वें हिंदी लेखक और छत्तीसगढ़ के पहले लेखक हैं।

लेखक :
श्रेया कुमारी
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

बिहार बोर्ड की टॉपर : सपनों को साकार करती एक प्रेरणादायक कहानी

बिहार बोर्ड 2025 के टॉपर्स की कहानी न सिर्फ मेहनत की मिसाल है, बल्कि यह बताती है कि कठिन हालात मे भी इंसान की हिम्मत को नहीं तोड़ सकते। इस वर्ष इंटरमीडिएट परीक्षा के परिणामों में एक बार फिर से बेटियों ने बाज़ी मार ली है। इस वर्ष की टॉपर सूची में लड़कियों की भागीदारी ने यह साबित कर दिया है कि अब शिक्षा के क्षेत्र में बेटियाँ किसी से पीछे नहीं हैं।

टॉपर छात्राओं की सफलता सिर्फ अंकों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके संघर्ष की कहानी हर विद्यार्थी के लिए प्रेरणा बन गई है।

पश्चिम चंपारण जिले के हटनाटांगड़ गांव की प्रिया जायसवाल ने विज्ञान संकाय में 96.8% प्राप्त कर प्रदेश में प्रथम स्थान हासिल किया। प्रिया के पिता , संतोष जायसवाल ,एक किसान है और आटा चक्की चलाकर परिवार का पालन पोषण करते है। समिति आर्थिक संसाधनों के बावजूद उन्होंने प्रिया की शिक्षा में कोई कमी नहीं आने दी । प्रिया ने बताया बिना किसी कोचिंग के , घर पर ही प्रतिदिन लगभग 8 घंटे पढ़ाई कर हर सफलता अर्जित की । उनका सपना डॉक्टर बनकर समाज की सेवा करना है, विशेषकर गरीबों का मुफ्त इलाज करना।

प्रिया की इस उपलब्धि से पूरे गांव में खुशी की लहर है। गांववासियों और स्कूल प्रकाशन ने उन्हें सम्मानित किया और उनकी सफलता अन्य छात्रों के लिए प्रेरणा बन गई है। प्रिया की कहानी उनके संघर्ष,सम्पूर्ण और दृढ़ निश्चय का प्रतीक है , जो दर्शाता है कठिन परिस्थितियों में भी मेहनत और लगन से सफलता प्राप्त की जा सकती है।

जागरूकता बढ़ रही है। खासकर ग्रामीण इलाकों में अब माता-पिता बेटियों की पढ़ाई को महत्व देने लगे हैं। स्कूलों में "कन्या उत्थान योजना", " साइकिल योजना" जैसी सरकारी योजनाओं ने लड़कियों की स्कूल तक पहुँच आसान बनाई है।

2025 के परिणाम इस बात का प्रमाण हैं कि यदि अवसर मिले और थोड़ी सी हिम्मत हो, तो बेटियाँ किसी भी क्षेत्र में सफलता का परचम लहरा सकती हैं। आज लड़कियाँ न केवल अच्छे अंक ला रही हैं, बल्कि प्रशासनिक सेवाओं, तकनीकी क्षेत्र और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रही हैं। बिहार बोर्ड के इस वर्ष के परिणामों से स्पष्ट है कि बेटियाँ अब सिर्फ घर की चारदीवारी में सीमित नहीं हैं। वे उड़ान भर रही हैं, अपने सपनों को साकार कर रही हैं और समाज को एक नई दिशा दे रही हैं।बिहार बोर्ड 2025 के टॉपर्स की कहानियाँ हमें यह सिखाती हैं कि कठिन परिस्थितियाँ भी सफलता के रास्ते में बाधा नहीं बन सकतीं, अगर मन में लक्ष्य पाने की लगन हो। बेटियाँ आज न केवल अपने परिवार का नाम रोशन कर रही हैं, बल्कि पूरे राज्य और देश का गौरव बन रही हैं।

लेखक :
अर्पिता कृष्णा
छात्रा,
स्नातक द्वितीय सेमेस्टर
मीडिया अध्ययन विभाग

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
प्रो. संजय श्रीवास्तव
मा. कुलपति
म.गाँ.के.विवि.

मार्गदर्शक
डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष
मीडिया अध्ययन विभाग

संपादक
डॉ. सुनील दीपक घोडके
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

उप-संपादक
डॉ. श्याम नन्दन
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सह-संपादक
डॉ परमात्मा कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक
मीडिया अध्ययन विभाग

सह-संपादक
डॉ. उमेश पात्रा
सहायक प्राध्यापक
अंग्रेजी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. गोविंद वर्मा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. आशा मीणा,
सहायक प्राध्यापक
हिंदी विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. बबलू पाल
सहायक प्राध्यापक
संस्कृत विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. दुर्गेश्वर सिंह
सहायक प्राध्यापक
वनस्पति विज्ञान विभाग

सलाहकार संपादक
डॉ. पाथलोथ ओमकार
सहायक प्राध्यापक
शैक्षिक अध्ययन विभाग

सलाहकार संपादक
सुश्री शेफालिका मिश्रा
जनसंपर्क अधिकारी
म.गाँ.के.विवि.

प्रकाशक
विशेष कार्याधिकारी (प्रशासन)
म.गाँ.के.विवि.

वितरण एवं प्रसार
जनसंपर्क प्रकोष्ठ
म.गा.के.विवि.

ले-आउट डिज़ाइन
प्रतीक कुमार
छात्र (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

कंपोजिंग
शिवानी कुमारी
छात्रा (स्नातकोत्तर)
मीडिया अध्ययन विभाग

समाचार संकलन

तुशाल कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
सुशील कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
पूजा कौशिक, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
जन्मेजय कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
आशीष कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
लक्की कुमार, छात्र (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
रूचि भारती, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग
भावना कुमारी, छात्रा (स्नातकोत्तर), मीडिया अध्ययन विभाग

मोतिहारी, बिहार | सितंबर-अक्टूबर-नवंबर 2024 (संयुक्तांक)
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार
परिसर प्रतिबिंब
ई-समाचार पत्र
www.mgcub.ac.in
@MGCUB2016 @mgcu_bihar @MGCUBihar

उमंग-२.० की झलकियां